सम्पादक
डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी
सहायक
मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
फोन : 0522–2740406
फैक्स : 0522–2741221
E-mail : nadwa@sancharnet.in
nadwa@bsnl.in

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 15/-
वार्षिक	₹ 150/-
विशेष वार्षिक	₹ 500/-
विदेशों में (वार्षिक)	30 यु.एस. डॉलर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
"सच्चा राही"
पता
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग
लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

हिंदी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक
लखनऊ

अक्तूबर, 2014 वर्ष 13 अंक 08

मन्क़बते हस्नैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा

हज़रत हसन हुसैन नवासे रसूल के
महबूबे रब हस्नैन नवासे रसूल के
बूबक्र,, उमर, उस्मान को महबूब थे दोनों
हैं फ़ातिमा के लाल नवासे रसूल के
बूबक्र, उमर, उस्मान का करते अदब हस्नैन
हज़रत अली की जान, नवासे रसूल के
इक ज़हर से शहीद तो ख़ंजर से इक शहीद
दोनो हुए शहीद नवासे रसूल के
जन्नत के नौजवानों के सरदार हैं दोनों
हैं मर्तबा ये रखते, नवासे रसूल के
हों रहमतें रसूल पे, अस्हाब पे उनके
शामिल हों रहमतों में नवासे रसूल के

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

विषय एक दृष्टि में

कुर्आन की शिक्षा	मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी	3
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	4
हज़राते हस्नैन रज़ि0	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	5
जगनायक	हज़रत मौ0 सै0 मु0 राबे हसनी नदवी	9
हिन्दुस्तानी मुसलमान एक दृष्टि में	हज़रत मौ0 अली मियाँ नदवी रह0	11
अपनी औलाद की फ़िक्र	मौ0 सै0 मुहम्मद हमज़ा हसनी नदवी	13
मानवता का स्तर	मौ0 सै0 अबुल हसन अली नदवी रह0	14
इख़्लास और उसके बरकात	मौ0 सै0 अब्दुल्लाह हसनी नदवी रह0	16
भ्रष्टाचार मुक्त समाज	मुहम्मद अली शाह शुऐब	18
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती ज़फर आलम नदवी	23
मुस्लिम पर्सनल लॉ में अनुचित	डॉ0 मुहम्मद अहमद	28
बिदअत (दीन में नई बात)	मौलाना खालिद सैफुल्लाह रहमानी	31
बच्चों की सामान्य बीमारियाँ	डॉ0 सूर्यकान्त मिश्र	33
विभिन्न कवितायें	इदारा	36
उर्दू सीखिए	इदारा	39
अंतर्राष्ट्रीय समाचार	डॉ0 मुईद अशरफ नदवी	40

क़ुर्आन की शिक्षा

—मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी

सूर-ए-बक़र:

अनुवाद- और जब सामने हुए जालूत के और उसकी फौजों के तो बोले ऐ हमारे रब ड़ाल दे हमारे दिलों में सब्र, और जमाये रख हमारे पाँव और मदद कर हमारी उस काफ़िर क़ौम पर[250] फिर शिकस्त दी मोमिनों ने जालूत के लशकर को, अल्लाह के हुक्म से और मार ड़ाला दाऊद ने जालूत को, और दी दाऊद को अल्लाह ने सलतनत और हिक़मत, और सिखाया उनको जो चाहा, और अगर न होता दफअ करा देना अल्लाह का एक को दूसरे से, तो खराब हो जाता मुल्क़ लेकिन अल्लाह बहुत मेह्रबान है जहाँ (दुन्या) के लोगों पर[1][251] यह आयतें अल्लाह की हैं हम तुझ को सुनाते हैं ठीक ठीक, और तू बेशक हमारे रसूलों में है[2][252]।

तफ़्सीर (व्याख्या):-

1. जब सामने हुए जालूत के यानी वही तीन सौ तेरह आदमी और उन्हीं 313 में हज़रत दाऊद के वालिद और उनके 6 भाई और खुद हज़रत दाऊद भी थे, हज़रत दाऊद को रास्ते में तीन पत्थर मिले और बोले कि उठा ले हम को, हम जालूत को क़त्ल करेंगे, जब मुकाबला हुआ जालूत खुद बाहर निकला और कहा मैं अकेला तुम सबको काफी हूँ मेरे सामने आते जाओ हज़रत अशमोईल ने हज़रत दाऊद के बाप को बुलाया कि अपने बेटे मुझको दिखला उसने 6 बेटे दिखाये जो लम्बे चौड़े क़द आवर थे, हज़रत दाऊद को नहीं दिखाया उनका क़द छोटा था और बकरियाँ चराते थे, पैग़म्बर ने उन को बुलाया और पूछा कि तू जालूत को मारेगा उन्होंने कहा मारूँगा फिर जालूत के सामने गये और उन्हीं तीनों पत्थरों को फलाखन (वह रस्सी का फंदा जिसमें पत्थर रख कर फेंकते हैं) में रख कर मारा, जालूत का सिर्फ माथा खुला था और पूरा बदन लोहे में गर्क़ (डूबा) हुआ था, तीनों पत्थर उसके माथे पर लगे और पीछे से निकल गये, जालूत का लशकर भागा और मुसलमानों को फत्ह हुई फिर तालूत ने हज़रत दाऊद से अपनी बेटी का निकाह कर दिया और तालूत के बाद यह बादशाह हुए इससे मालूम हो गया कि हुक़्मे जिहाद हमेशा से चला आ रहा है और इसमें अल्लाह की बड़ी रहमत और एहसान हैं। नादान कहते हैं कि लड़ाई नबियों का काम नहीं।

2. यह किस्सा जो बनी इस्राईल का गुजरा यानी हजारों का निकलना और उनका अचानक मरना और जीना और तालूत का बादशाह होना यह सब अल्लाह की निशानियाँ हैं जो तुझको सुनाई जाती हैं और तुम बेशक अल्लाह के रसूलों में हो यानी जैसे पहले पैग़म्बर हो चुके हैं वैसे ही तुम भी यक़ीनन रसूल हो कि इन गुजरे हुए सदियों के किस्सों को ठीक ठीक बयान करते हो हालांकि न किसी किताब में आपने देखा और न किसी आदमी से सुना। ❑❑

प्यारे नबी की प्यारी बातें

ईमान के सबसे अफ़ज़ल अ़मल —अमतुल्लाह तस्नीम

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से किसी ने अर्ज किया या रसूलुल्लाह कौन सा अमल जियादा अफजल है आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान, अर्ज किया उसके बाद, फरमाया अल्लाह के रास्ते में जिहाद, फिर अर्ज किया, तो फरमाया हज्जे मबरूर (मक़बूल)।

(बुख़ारी—मुस्लिम)

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि0 से रिवायत है कि मैंने अर्ज किया या रसूलुल्लाह, अल्लाह तआला को कौन सा अमल महबूब है, फरमाया वक़्त पर नमाज़ पढ़ना, मैंने अर्ज किया फिर, फरमाया माँ—बाप के साथ भलाई करना, मैंने अर्ज किया फिर, फरमाया अल्लाह के रास्ते में जिहाद करना।

(बुख़ारी—मुस्लिम)

हज़रत अबू ज़र रज़ि0 से रिवायत है कि मैंने अर्ज किया या रसूलुल्लाह कौन सा अ़मल अफज़ल है, फरमाया अल्लाह पर ईमान और उसके रास्ते में जिहाद करना। (बुख़ारी—मुस्लिम)

हज़रत अनस रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया एक पहर दिन को, रात को, अल्लाह की राह में जिहाद के लिए चलना, दुन्या और दुन्या की हर चीज़ से बेहतर है।

(बुख़ारी—मुस्लिम)

हज़रत अबू सईद खुद्री रज़ि0 से रिवायत है कि एक आदमी हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाजिर हुआ और अर्ज किया या रसूलुल्लाह सबसे बेहतर कौन आदमी है, फरमाया वह मोमिन जो अल्लाह के रास्ते में अपनी जान और माल के साथ जिहाद करे, अर्ज किया फिर कौन, फरमाया वह मोमिन जो किसी घाटी में अल्लाह की इबादत करे, और लोगों से दूरी सिर्फ इस लिए इख़्तियार करे कि लोग उसके शर्र (बुराई) से महफूज़ रहें। (बुख़ारी—मुस्लिम)

हज़रत सहल बिन सअ़द रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया अल्लाह के रास्ते में एक दिन पहरा देना, दुन्या और जो कुछ उसमें है उससे बेहतर है और जन्नत में तुम्हारे लिए सिर्फ एक कोड़े की जगह, दुन्या और जो कुछ दुन्या में है सबसे बेहतर है और कोई अल्लाह का बन्दा, अल्लाह के रास्ते में शाम को चले या सुब्ह को तो वह दुन्या से और जो कुछ उस दुन्या में है सबसे बेहतर है।

(बुख़ारी—मुस्लिम)

हज़रत सलमान रज़ि0 से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

शेष पृष्ठ .....10.. पर

हज़रते हसनैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा से महब्बत

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

हस्नैन से मुराद हज़रत हसन और हज़रत हुसैन बिन हज़रत अली रजियल्लाहु अन्हुम हैं। दोनों बुजुर्ग जन्नती औरतों की सरदार हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के चहीते और लाडले बेटे हैं, और नबीये अकरम हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चहीते नवासे हैं, दोनों को नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी गोद में सुलाया, अपने कंधों पर चढ़ाया, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफ़ात के वक्त अगरचि दोनों की उम्रें कम थीं फिर भी लगभग छे सात साल के थे, दोनों हज़रात की उम्रों में सिर्फ एक साल का फ़र्क़ था, दोनों हज़रात नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ मस्जिद जाते नमाज़ पढ़ते दोनों बुजुर्गों को सहाबीयत का शरफ़ (सम्मान) हासिल है यही सबब है कि उम्मत के बड़े और छोटे सब हज़राते हस्नैन से महब्बत करते हैं।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दोनों हज़रात के बारे में फरमाया "अल हसन वल हुसैन, सय्यिदा शबाबि अहलिल जन्नति" "हसन और हुसैन जन्नत के जवानों के सरदार हैं, और हज़रत हसन के बारे में फ़रमाया यह मेरा बेटा मुसलमानों के दो बड़े गिरोहों में मेल करायेगा" और भी बाज़ अहादीस हस्नैन की फ़ज़ीलत में आई हैं, यही वजह है कि उम्मत के तमाम बड़े और छोटे बुजुर्ग हज़राते हस्नैन से महब्बत करते हैं।

अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उम्मत को जो दुरूद सिखाया जिसे उम्मत हर नमाज़ के आख़िर में पढ़ती है उसका तर्जुमा (अनुवाद) इस प्रकार है:—

ऐ अल्लाह रहमत नाज़िल फ़रमा मुहम्मद पर और मुहम्मद की आल पर जैसे रहमत नाज़िल फ़रमाई इब्राहीम पर और इब्रहीम की आल पर बेशक तू बड़ा क़ाबिले तारीफ़ (प्रशंसा योग्य) तथा बड़ा बुजुर्ग है, ऐ अल्लाह बरकत उतार (नाज़िल फ़रमा) मुहम्मद पर और मुहम्मद की आल पर जैसे बरकत उतारी इब्राहीम पर और इब्राहीम की आल पर बेशक (निःसन्देह) तू तारीफ़ के लाइक और बड़ा बुजुर्ग है।

इस दुरूद में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आल पर रहमत व बरकत की दुआ मांगने की तालीम दी गई है जिसे उम्मत हर नमाज़ के आखिर में अल्लाह तआला से मांगती है।

बेशक नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आल से हज़रते ज़ैनब हैं, हज़रते रुक़य्या हैं, हजरते उम्मे कुलसूम हैं और हज़रते फ़ातिमा हैं (रज़ियल्लाहु अन्हुम) औलादे नरीना में हज़रते क़ासिम, हज़रत ताहिर, हज़रत तय्यिब और हज़रते इब्राहीम हैं (रज़ियल्लाहु अन्हुम) यह

चारों हज़रात बचपन ही में अल्लाह को प्यारे हो गये थे। साहिबज़ादियाँ (बेटियाँ) चारों बड़ी हुईं, अक़्द हुआ मगर हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के सिवा किसी से नस्ल न चली, अलबत्ता हज़रत जैनब से एक बेटी उमामा पैदा हुईं और जवान हुई तो हज़रत अली से निकाह हुआ मगर उनसे भी कोई नस्ल न चली हज़रत फ़ातिमा से एक बेटी हज़रत जैनब हुईं उनसे भी किसी औलाद का जिक्र नहीं मिलता, दो बेटे हज़रत हसन और हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुम से नस्ल चली और बड़ी बरकत हुई आज दुन्या में फातिमी सादात इन्हीं की औलाद हैं, उम्मत इन सब के लिए हर नमाज़ में रहमत व बरक़त की दुआ करती है, इस सारी आल में हस्नैन की बड़ी अहमीयत है कि उन्हीं से नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नस्ल इनशाअल्लाह तआला कियामत तक चलेगी। चुनांचि उम्मत इन दोनों बुजुर्ग हस्तियों से दिली महब्बत रखती है।

हज़रते हसन रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत मुआविया में जंगें हुईं, दोनों अल्लाह के रसूल के सहाबी हैं, और सहाबा की आपसी लड़ाइयों का ज़िक्र मकरूह (ना पसन्दीदा) बताया गया है, उनकी लड़ाइयां भी उम्मत को कुछ सिखाने के लिए हुईं, अब यही हदीस ले लीजिए कि: यह मेरा बेटा मुसलमानों के दो बड़े गिरोहों में मेल कराएगा, इन दोनों बुज़ुर्गों की लड़ाई भी इसी मसलहत से थी की दो बड़े गिरोहों में हज़रत हसन रज़ि0 मेल करा दें।

रही करबला की लड़ाई और हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत तो यह मालूम होना चाहिए कि हज़रत हुसैन रज़ि0 का लड़ाई का इरादा हरगिज़ न था। उन्होंने तो मुलूकीयत को नकारा था और इस का उनको हक़ था, हालांकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमा दिया था कि तीस साल तक ख़िलाफ़त रहेगी उसके बाद मुलूकीयत आ जाएगी, और मुलूकीयत में यही होता रहा था कि बाप के बाद उसका बेटा बादशाह बने, मगर इस रिवायत से उम्मत मानूस न थी, फिर सहाबीये रसूल हज़रत मुआविया ने तमाम पहलुओं पर गौर करके अपने बाद अपने बेटे यज़ीद को नामज़द किया था इसलिए यजीद और उसके सहयोगी इसको हक़ जानते थे और जिन हज़रात ने इसे ना पसन्द किया था उनको यह बात इस्लाम में नई लग रही थी इसलिए उन्होंने यजीद को अमीर न माना हज़रत हुसैन भी उन्हीं में से थे और बेशक वह हक़ पर थे।

ख़ज़ाना, फ़ौजी ताक़त, यज़ीद को अपने वालिद से मिली थी इसलिए उसकी हुकूमत चल गई, मुखालिफीन में हज़रत हुसैन और हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि0 हयात थे, यज़ीद अपनी जगह हाकिम था यह दोनों हज़रात मक्के में मामून थे, मगर बुरा हो अहले कूफा का उन्होंने अपना अमीर बनाने के लिए हज़रत हुसैन रज़ि0 को दावत दी और पीछे पड़ गये यहां तक कि हुसैन रज़ि0 अपने

अहल व अयाल और कुछ साथियों के साथ कूफा रवाना हो गये, तजरिबे कार हमदर्दों ने बारहा समझाया लाख रोका लेकिन होनी हो के रही। मेरा अपना ख़्याल है कि हज़रत को पूरी उम्मीद होगी कि उनके मरतबे का लिहाज़ करके उनसे मुजाहमत न की जाएगी, मगर कोई बादशाह कितना ही दीनदार हो अपनी बादशाहत में दख़ल अन्दाज़ी बरदाश्त नहीं कर सकता, यज़ीदी ताकत ने हज़रत हुसैन को कूफ़ा जाने से रोकने का पूरा नज़्म किया, फ़िर कूफा में जो कुछ हुआ, रास्ते में जो कुछ हुआ उसकी तफसील छोड़ते हुए यह अर्ज़ करना चाहते हैं कि हमारे हज़रत को मैदाने करबला में पहुंचा दिया गया, हमारे हज़रत कुल 72 थे जब कि इब्नि ज़ियाद ने पाँच हजार की फ़ौज सामने लगा दी और चाहा कि हज़रत हुसैन अपने को उस ना हंजार के हवाले कर दें ज़ाहिर में वह यही कहता रहा कि हुसैन मेरे हाथ पर यजीद के लिए बैअ़त करें लेकिन उसका मक्सद हज़रत हुसैन पर काबू पाना था। हज़रत अपने चचा जाद भाई मुस्लिम बिन अकील का अंजाम देख चुके थे जिनको इब्ने जियाद बद निहाद ने कूफा में शहीद किया था इस सूरत में हजरत उसके सामने कैसे झुक सकते थे? हज़रत ने तीन बातें सामने रखीं, मुझे वापस जाने दिया जाए, मुझे यजीद के पास जाने दिया जाए, या मुझे किसी तरफ चले जानें दिया जाए। मगर इब्नि ज़ियाद ने एक न मानी वह यही चाहता रहा कि हज़रत हुसैन रज़ि0 उसके हवाले हों, हज़रत भी अपनी बात पर अटल रहे नतीजा यह हुआ कि दस मुहर्रम 61 हिज्री को यजीदी फौज ने हमारे हज़रत को उनके साथियों के साथ शहीद करके अपना ठिकाना जहन्नम बना लिया इन्ना लिल्लिलाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।

हज़रत हुसैन की इस शहादत पर उम्मत को बड़ा ग़म हुआ यहाँ तक कि यज़ीद ने भी इस हादिसे पर आँसू बहाए, और इब्नि ज़ियाद पर लानत की मगर अब तो जो कुछ होना था वह हो गया। इस हादिसे के बाद उम्मत में हज़रत हुसैन से हमदर्दी और उनकी महब्बत में इज़ाफ़ा हुआ।

इसमें शक नहीं कि उम्मत हज़राते हस्नैन रज़ि0 से दिली महब्बत रखती है, मगर इसमें भी कोई शक नहीं कि उम्मत की एक तादाद महब्बत में इतना बढ़ी कि अस्ल रास्ते से भटक गई हम इस विषय पर नीचे कुछ बातें नम्बर वार लिखते हैं–

1. हस्नैन रजियल्लाहु अन्हुमा हज़रत अबू बक्र, हज़रत उमर और हज़रत उस्मान रजियल्लाहु अन्हुम का अदब करते थे उनको अपना बड़ा मानते थे, उनके पीछे नमाज़ें पढ़ते थे, उनके दिये हुए वजीफ़े क़बूल करते थे, जिस वक़्त बाग़ियों ने हज़रत उस्मान रज़ि0 का घर घेरा तो दोनों भाई उनके दरवाजे पर पहरा दे रहे थे, लिहाज़ा हजराते हस्नैन से महब्बत की मांग (तकाजा) है कि हम भी खुलफ़ाए सलासा को उन्हीं की तरह मानें जैसे कि अहले सुन्नत का अमल है।

2. हज़राते हस्नैन ने हर मुश्किल से मुश्किल को हल करने की जाइज़ कोशिश की और अल्लाह से दुआ माँगी मगर किसी दुआ में नाना जान से या अपने वालिद से न मांगा लिहाज़ा हम को भी चाहिए कि उनकी पैरवी में मुश्किल में जाइज़ कोशिशों से उनका हल निकालें और तौबा व इस्तिग़फार करके अल्लाह तआला से मुश्किल के हल की दुआ मांगे, जो लोग मुश्किलात में हजराते हस्नैन या हजरत हुसैन को पुकारने लगते हैं वह उनके रास्ते से हटे हुए हैं।

3. हज़रत अली रजियल्लाहु अन्हु की शहादत हज़राते हस्नैन ने अपनी आँखों से देखी लेकिन कभी उनकी तारीख़े शहादत पर गम की याद न मनाई न उनके नाम का ताजिया रखा, लिहाजा हमको चाहिए कि उनकी पैरवी में उनकी शहादत पर और शहादत की तारीख पर ग़म की महफ़िल न क़ाइम करें न नौहा पढ़ें न सीना पीटें अगर उनकी याद आए तो इन्नालिल्लाहि..... पढ़ें और हक पर कुर्बान होने का जज्बा पैदा करें हमारे जो भाई मुहर्रम में यह सब मुनकरात करते हैं वह हज़राते हस्नैन की राह से हटे हुए हैं।

4. कुछ लोग तो नज़्र मानते हैं कि या इमाम हुसैन अगर हमारा फुलां काम हो जाएगा तो मैं आपका ताजिया रखूंगा, और फिर अल्लाह तआला काम बना देते हैं तो वह ताज़िया रखते हैं फिर ताज़िया के सामने चढ़ावा चढ़ाते हैं, बाजे गाजे के साथ ताज़िया के जुलूस निकालते हैं यह सारे काम हजराते हस्नैन के नाना जान की शरीअत के ख़िलाफ़ हैं बल्कि बाज़ तो शिर्क तक पहुंच चुके हैं, इनसे बचना ज़रूरी है अगर हज़रात हस्नैन होते तो इस तरह के काम करने वालों से जिहाद करते।

5. कुछ लोग हजरत हुसैन की तारीफ़ में यहां तक कह जाते हैं कि इस्लाम मिटा जा रहा था हज़रत हुसैन ने शहादत दे कर इस्लाम को बचा लिया, यह बात भी हद से बढ़ी हुई है इसलिए कि यज़ीदी लोग इस्लाम मिटाने नहीं उठे थे, वह तो अपनी हुकूमत में एक रुकावट को दूर करना चाहते थे हां यज़ीदी फ़ौज खास तौर पर इब्ने ज़ियाद की अक़्ल मारी गई और उसने हज़रत हुसैन को यज़ीद के पास पहुंचाने के बजाए उनको शहीद करके अपनी आकि़बत ख़राब करली। यज़ीद या यज़ीदी फ़ौज अगर इस्लाम मिटाने का (ख़ुदा की पनाह) इरादा करती तो लोगों को अज़ान व नमाज़ से रोकती लेकिन हम देखते हैं कि यजीदी फ़ौज ने अपने सरदार हुर के साथ हज़रत हुसैन रजियल्लाहु अन्हु के पीछे नमाज़ अदा की लिहाज़ा यह कहना दुरुस्त नहीं कि यजीदी इस्लाम मिटा रहे थे हज़रत हुसैन रज़ि0 ने अपनी कुर्बानी देकर इस्लाम को बचा लिया।

हाँ इस्लाम को बचाया अहले बद्र ने अहले उहुद ने, अहले खन्दक ने, अहले हुनैन वगैरह ने, अल्लाह उन सबसे राज़ी हुआ उनके मुख़ालिफ़ीन

शेष पृष्ठ .....30.. पर

जगनायक

—हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी —अनु0 मुहम्मद गुफ़रान नदवी

वुफ़ूद (शिष्टमण्डल) की आमद और इस्लाम का कुबूले आम सन् 09 हिजरी—

हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और मुसलमानों को 2 जिहरी से 9 हिजरी तक दुश्मानों की कार्यवाईयों का मुकाबला करते हुए पूरे अरब कबाएल के सामने आपकी ताबेदारी के अलावा दूसरा हल बाक़ी नहीं छोड़ा यहां तक की सन् 9 हिजरी में मक़ामे तबूक़ में रूमी एम्पायर के मुकाबले से दस्तबरदार हो जाने पर मुसलमानां के लिए जंग के खतरात खत्म हो गए और आपकी दावत और हिदायत आम करने के अमल को रोकने की आपके मुखालिफों की तरफ से जो मुसल्लह कार्यवाईयाँ हो रही थीं, ख़त्म हो गईं तो पूरे अरब द्वीप में आपकी रहबराना हैसियत और मुसलेह (सुधारक) का मक़ाम खुल कर सामने आ गया, तो जो अरब क़बाएल इस्लाम को समझने और मानने में रुकावट महसूस कर रहे थे उनके वुफ़ूद इस्लाम को समझने के लिए आना शुरु हुए।

चुनांचे इब्ने इस्हाक़ की रिवायत के मुताबिक़ बनू तमीम का वफ़्द बनू आमिर का वफ़्द, बनी असद बिन बक्र का वफ़्द, बनी अब्दुल क़ैस का वफ़्द, बनी हिमयर का वफ़्द, बनू हारिस बिन कअब का वफ़्द, हमदान का वफ़्द, अदी बिन हातिम का वफ़्द, फ़रवा बिन अमर अल जुज़ामी का वफ़्द, और अज़्द का वफ़्द, अलग अलग औक़ात में मदीना आए और आपसे मुलाकात की। उनमें से अधिकांश ने आपकी बात को कुबूल किया और उसमें दाख़िल हो गये या मुसालिहत (समझौता) इख़्तियार कर ली[1]।

बनी हनीफा के वफ़्द, में मुसैलिमा कज़्ज़ाब भी था, यह इस्लाम लाया और बा में मुरतद (बेदीन) हो गया और खुद नबूवत का दावेदार बन बैठा, उसी ने फितन—ए—इरतिदाद बरपा किया और उसी में मारा गया।

इन वुफ़ूद के इलाक़ों को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि इन वुफ़ूद के आने और बात मानने से जज़ीरतुल अरब के तक़रीबन हर हिस्से से अरबों की ताबेदारी मुकम्मल हो गई और इस तरीके से आपकी दावत सारे जज़ीरतुल अरब में सिर्फ यही नहीं कि पूरे अरब में पहुंच गई बल्कि कुबूल भी कर लिया गया। इन वुफ़ूद के आने पर उनके नुमाइंदों (प्रतिनिधि) की हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से जो वार्तालाप हुई उसकी तफ़सील सीरत की किताबों में भी मिलती है। इस वार्तालाप के नतीजे में वुफ़ूद के नुमाइंदों को आमतौर पर जो इतमीनान हासिल होता था और वह इस्लाम को कुबूल कर लेते थे, यह ताबेदारी का वादा करके वापस चले जाते थे, और इस तरीके से जज़ीरतुल अरब जो अब तक क़बाईली और हुकूमती सतह

1. सीरत इब्ने इस्हाक़ 3/309—310

पर बहुत से इलाकों में बँटा हुआ था, और उनमें मुक़ामी और इलाकाई सतह पर आज़ादाना मुश्रिकाना निज़ाम था और वह उमूमन ख़ानदानी असबियत (पक्षपात) पर आधारित था इस्लाम के तहत आने पर एक संयुक्त पैग़ाम और निज़ाम के तहत आ गया और एक मरकज़ पर जमा हो गया[1]।

हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन इलाक़ों और खित्तों में जहां आपकी दावते दीन नहीं पहुंच सकी थी, वहां तक पहुंचायी जो आहिस्ता आहिस्ता मान ली गई और इस तरीके से सन् 9 हिजरी में आपका दावती पैग़ाम तकमील को पहुँच गया और मक्का मुकर्रमा जो पहले से जज़ीरतुल अरब के तमाम बाशिन्दों का दीनी मरकज़ चला आ रहा था और कुरैश मेज़बान की हैसियत से उनका निज़ाम संभाले हुए थे वो भी इस्लामी निज़ाम के तहत आ गया[2]।

चुनांचे हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि0 की क़यादत में सन् 9 हिजरी के ख़त्म पर हज के निज़ाम की रहनुमाई के लिए इन्तिज़ाम फरमाया और हज़रत अबू बक्र रज़ि0 ने आपके नुमाइन्दें (प्रतिनिधि) की हैसियत से इस्लामी तरीके पर हज कराया और इसी के साथ साथ आपने हज़रत अली रज़ि0 के ज़रिये यह ऐलान करा दिया कि अब शिर्क का निज़ाम (प्रबन्ध) ख़त्म हो चुका और अब मक्का में शिर्क के साथ रहने की इजाज़त नहीं अब तौहीद के साथ ही रहना होगा और मक्का और तमाम सम्बन्धित अरब इलाक़े इस तरह शिर्क और उसकी अलामतों से आज़ाद करा लिये गए और वहां सिर्फ तौहीद का ही निज़ाम तय हो गया[3]।

---

1. मजमअ़ बिहारुल अनवार 5/272
2. ज़ादुल मआद 3/593–594
3. देखिये तफ़सील, सीरत इब्ने हिशाम 2/560–600

❑❑

प्यारे नबी की.....

से सुना है, फरमाते थे जिहाद में एक दिन, रात को पहरा देना महीने भर के रोज़े और रात के क़ियाम से बेहतर है। अगर वह पहरेदार उसी हालत में मर जाये तो उसके अमल का सवाब उसके लिए जारी रहता है और उसका रिज़्क़ (जन्नत का खाना पीना) उसके लिए जारी रहता है और फितना में ड़ालने वाले से महफूज़ रहेगा। (मुस्लिम)

हज़रत फजाला बिन उबैद रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया हर आदमी की ज़िन्दगी के खात्मे पर उसका अमल भी खत्म हो जाता है लेकिन अल्लाह के रास्ते में पहरा देने वाले का अमल कियामत तक बढ़ाया जाता रहेगा और वह क़ब्र के फित्नों से महफूज़ रहेगा। (अबू दाऊद–तिर्मिज़ी)

हज़रत उस्मान रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया, अल्लाह के रास्ते में एक दिन पहरा देना दूसरी जगहों के हज़ारों पहरा देने से बेहतर है।

(तिर्मिज़ी)

❖❖❖

हिन्दुस्तानी मुसलमान एक दृष्टि में

पैदाइश से बालिग़ होने तक आधारभूत इस्लामी आस्थाएं

—हज़रत मौलाना अली मियाँ नदवी रह0

ईद की नमाज़ के पश्चात एक दूसरे से मिलना और सत्कार करना–

ईद का ख़ुत्बा समाप्त होते ही लोग एक दूसरे से गले मिलना आरम्भ कर देते हैं। यह बात ध्यान देने योग्य है कि यह गले मिलन की प्रथा हिन्दुस्तान की विशेषता है। मुआनिका (गले मिलना) का कोई धार्मिक अस्तित्व नहीं है और न इस्लामी केन्द्र में इसका प्रचलन है। कोई आश्चर्य की बात नहीं, सम्भवता मुसलमानों ने इसको अपने देश वासियों के कुछ त्योहारों की रस्मों, विशेषकर "होली मिलन" से अपनाया हो, जो प्रेम, हर्ष तथा उल्लास प्रकट करने का प्रतीक समझा जाता है। ईदगाह से वापसी पर लोग घरों पर ईद मिलने जाते हैं और एक दूसरे का मिठाई अथवा मीठी वस्तु द्वारा सत्कार करते हैं। इस अवसर पर सिवईयों का ऐसा प्रचलन हो गया है कि वह ईद का एक प्रतीक (Symbol) बन गई हैं, इसका भी सम्बन्ध विशेष कर हिन्दुस्तान से है दूसरे इस्लामी देशों में किसी भी प्रकार की मिठाई एवं इत्र से सत्कार किया जाता है।

बक़रईद में कुर्बानी का आयोजन तथा उसकी महानता–

ईदुल–अज़हा (बक़रईद) में केवल कुर्बानी की अभिवृद्धि हो जाती है। इसमें सदक़–ए –फ़ित्र नहीं दिया जाता। इसके अतिरिक्त एक अन्तर यह भी है कि ईद शव्वाल माह की पहली तारीख़ को होती है, जब कि बक़रईद ज़िलहिज की दसवीं तारीख़ को होती है। यह वह दिन है जब कि मक्का मुकर्रमा में हाजी हज की समस्त प्रक्रियाओं से निवृत्त हो जाते हैं, और मिना[1] में अल्लाह के ज्ञान, ध्यान, उपासना, कुर्बानी और अल्लाह की प्रदत्त की हुई वस्तुओं को प्रयोग करने तथा खान पान में व्यस्त होते हैं। दूसरा अन्तर यह है कि ईदुलफित्र एक दिन की होती है जब कि ईदुल–अज़हा तीन दिन (10–11–12 ज़िलहिज) ईदुल–अज़हा की नमाज़ तो एक ही दिन अर्थात् 10 ज़िलहिज को पढ़ी जाती है, परन्तु कुर्बानी 12, ज़िल हिज को सूर्य अस्त होने तक की जा सकती है। ईदुल–अज़हा के अवसर पर एक बात यह भी है कि 9, ज़िल हिज की फ़ज्र की नमाज़ के बाद से 13, ज़िल हिज की अस्र की नमाज़ तक हर फर्ज़ नमाज़ के बाद कुछ विशिष्ट शब्द ऊँची आवाज़ में कहे जाते हैं, जिनमें खुदा की बड़ाई का एलान और उसका गुण गान होता है। इनको तकबीरात तशरीक़ कहते हैं जिनका अर्थ अग्र लिखित है:–

अल्लाह सबसे बड़ा है– अल्लाह सबसे बड़ा है। अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं अल्लाह सबसे बड़ा

1. मक्का मुकर्रमा नगर से चार मील दूर एक स्थान का नाम

है–अल्लाह सबसे बड़ा है और अल्लाह ही का शुक्र अदा किया जाता है।

कुर्बानी के गोश्त के तीन भाग किये जाते हैं। एक भाग अपने घर वालों और अपने प्रयोग तथा आतिथ्य हेतु दूसरा भाग मित्रों एवं पड़ोसियों के लिए और तीसरा भाग अनाथों तथा गरीबों के लिए। यह दिन खान पान हेतु निर्धारित किये गये हैं और ईदुल–फित्र के एक दिन तथा ईदुल अज़हा के तीनों दिन रोज़ा रखना निषिद्ध है। सामान्यतः मुसलमान ईदुल अज़हा के दिन सन्तुष्टि पूर्ण खाते पीते हैं और बहुत से लोगों को वे वस्तुएँ उपलब्ध हो जाती हैं और गोश्त की इतनी मात्रा खाने में आती है जो बहुधा साल भर उपलब्ध नहीं होती।

दोनों त्योहार मुसलमानों के अन्तर्राष्ट्रीय त्योहार हैं–

ईदुल–फ़ित्र तथा ईदुल–अज़हा मुसलमानों के विश्वव्यापी एवं अन्तर्राष्ट्रीय त्योहार हैं, जिनमें किसी देश, जाति एवं वर्ग का अपवाद नहीं, और यही वह दो त्योहार हैं, जिनके शास्त्रीय एवं धार्मिक मान में किसी प्रकार का मतभेद नहीं और किसी युग में भी इनके प्रति कोई आक्षेप नहीं किया गया, और लगभग समस्त देशों में चाहे वह देश बहुसंख्यक हो अथवा अल्पसंख्यक, उनके मनाने के ढंग और उनके व्यावहारिक तथा धार्मिक स्वरूप में कोई विशेष अन्तर नहीं, और यह उन समस्त धार्मिक क्रियाओं तथा प्रथाओं की विशेषता है, जो कुरआन मजीद और हदीस शरीफ़ से प्रमाणित तथा मुसलमानों में निरन्तर एवं अनवरत रूप से चली आ रही है।

दूसरे त्योहार–

अब हम यहां उन त्योहारों का वर्णन करते हैं, जो किसी सीमा तक स्थानीय एवं स्वदेशी हैं और जिनमें से कुछ का महत्व केवल भारत वर्ष में हैं, और उनमें बहुत से ऐसे तत्व एवं अनेक बातें सम्मिलित हो गई हैं जो हिन्दुस्तान के बाहर कोई मान नहीं रखतीं या उनके कार्यान्वित करने के ढंग भिन्न हैं।

12 रबीउल–अव्वल का हर्ष एवं उल्लास पूर्ण उत्सव–

इन त्योहारों और हर्ष एवं उल्लासपूर्ण उत्सवों में सबसे अधिक महत्व एवं सार्वजनिकता 12, रबी उल–अव्वल को प्राप्त है। इस्लामी कलेण्डर के हिसाब से वर्ष के तीसरे महीने रबी–उल–अव्वल की 12, तारीख को पैग़म्बरे–इस्लाम हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का जन्म हुआ था। संसार के अधिकांश देशों में इस दिन खुशी मनाई जाती है। बड़े–बड़े सम्मेलनों का आयोजन किया जाता है, जिनमें हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पवित्र एवं आदर्श जीवन, आपके संदेश तथा आपकी शिक्षाओं पर प्रकाश डाला जाता है। हिन्दुस्तान, मिस्र, तथा कुछ और देशों में इन सम्मेलनों को विशिष्ट विषय जन्म के बारे में वर्णन करना होता है, इसी कारण इन सम्मेलनों को जलस–ए–मीलाद अथवा मीलाद शरीफ़ की संज्ञा दी जाती है।

शेष पृष्ठ .....30... पर

अपनी औलाद की फिक्र कीजिए

—मौलाना सैय्यद मुहम्मद हमज़ा हसनी नदवी

जिन मुसलमान वालिदैन को अपना दीन अजीज है और वह इस्लाम के लिए हर तरह की कुरबानी और ईसार (उत्सर्ग) को अपने लिए फख (गर्व) समझते हैं, वह कभी भी इस को बरदाश्त नहीं कर सकते कि वह या उनके बच्चे दीन से दूर रह कर ज़िन्दगी गुज़ारें, वह अपने बच्चों की दीनी तालीम व तरबियत के लिए हर मुम्किन कोशिश करते हैं, बुरी सुहबत से बचाने की फिक्र करते हैं, उनको सच्ची और अच्छी बातें बतलाते हैं, बुजुर्गों के वाक़िआत सुना सुना कर दीन का ज़ज़बा पैदा करने की कोशिश करते हैं और सख़्त से सख़्त हालात में भी मायूस (निराश) नहीं होते, उन मुल्कों में जहाँ मुसलमानों का दीनी हैसियत से कोई निजाम काइम न था, न उनके बच्चों की दीनी तालीम व तरबियत का कोई इन्तिजाम था, बल्कि हुकूमत की तरफ से जो तालीम दी जाती थी वह मुसलमान बच्चों के लिए दीनी हैसियत से जहर से कम न थी, उस तालीम को हासिल करके मुसलमान बच्चा जो कुछ भी बनता, मुसलमान और खुदा का परस्तार (पुजारी) नहीं रह सकता था। ऐसे नाजुक मौके पर दीन की तड़प रखने वाले वालिदैन ने अपने बच्चों से गफ़लत नहीं की बल्कि उनकी दीनी तालीम का खुद इन्तिजाम किया, खुद वक्त निकाल कर उनकी दीनी तरबियत की और सरकारी तालीम के जहर से उनको बचा लिया और उनकी कोशिश से नस्लों की नस्लें इल्हाद व कुफ़्र से बच निकलीं और सिर्फ इस्लाम पर काइम ही नहीं रहीं बल्कि उनमें बाज ऐसी शख़्सीयतें पैदा हुई जिनके हाथों पर हज़ारों इन्सान जो खुदा से रूठे हुए थे, तौबा की, आज का दौर भी यही नजाकत (जटिलता) लिए हुए है, हमारे मुल्क में जो सरकारी तालीम राइज़ (प्रचलित) है और जो निसाब स्कूलों में पढ़ाया जाता है, वह भी अपने मवाद और अपनी तस्वीरों के लिहाज से मुसलमान बच्चों को उनके दीन से दूर करने और शिर्क की तरफ खींचने वाला है, आप पूरे निसाब पर नजर ड़ालिये, हज़ारों सफहात में गैर इस्लामी कल्चर की तारीफ, उसकी दावत व तलकीन ही मिलेगी (अर्थात इस्लाम से विमुख किया गया होगा) न मुसलमानों के बुजुर्गों का नाम मिलेगा न उनकी खिदमतों और कारनामों का तज़किरा मिलेगा, अगर कहीं कोई तजकिरा आ जाता है तो किसी तारीखी इमारत का या किसी बादशाह का।

नतीजा यह है कि मुसलमान बच्चों के मासूम दिमाग़ मुतअस्सिर (प्रभावित) होते हैं, स्कूल में वह यह दीन मुखालिफ बातें पढ़ते हैं, घरों में उनको कोई दीन की बात बताता नहीं, धीरे धीरे वह अपने बुजुर्गों तक से नावाकिफ

शेष पृष्ठ .....22.. पर

–पिछले अंक से आगे

मानवता का स्तर (एक तक़रीर)

–मौ0 सय्यद अबुल हसन अली नदवी

पैग़म्बरों की कार्य विधि–

पैग़म्बरों ने चरित्रवान् तथा सदाचारी व्यक्ति किस प्रकार पैदा किये, यह बात कुछ कम आश्चर्यजनक नहीं है। उन्होंने उनके अन्दर एक नवीन विश्वास की ज्योति जागृत की जिससे समस्त संसार उस समय वंचित था, जिसके अभाव ने समस्त सांसारिक व्यवस्था को अस्त–व्यस्त कर रखा था और मानव इसको खो कर दानव, एक हिंसक तथा लोभी पशु बन गया था अर्थात् ईश्वर के अस्तित्व का विश्वास और मृत्यु पश्चात् जीवन तथा उत्तरदायित्व का विश्वास और इस बात का विश्वास कि यह सत्य पुरुष ईश्वर का संदेश लाने वाले और मानव जाति का यथार्थ मार्ग दर्शन करने वाले हैं। इस विश्वास ने मनुष्य की काया पलट की और उसको एक बेलगाम पशु से एक उत्तरदायी इन्सान बना दिया।

इतिहास का अनुभव–

सहस्रों वर्ष का अनुभव बताता है कि मनुष्य निर्माण हेतु कोई बड़ी शक्ति नहीं। आज संसार का सबसे बड़ा दुर्भाग्य यह है कि विभिन्न प्रकार के दल हैं, जातियाँ हैं, संगठन तथा संस्थायें विद्यमान हैं परन्तु सदाचारी व्यक्ति दुर्लभ हैं और विश्व के बाजार में इसी तत्व का अभाव है, मानो व्यक्ति नाम की वस्तु का अकाल है। आशंकापूर्ण बात यह है कि उनकी तैयारी की लेश मात्र चिन्ता नहीं है और सच पूछिये तो यदि निर्माण हेतु प्रयास भी किया जाता है तो उसके लिए उचित मार्ग नहीं अपनाया जाता। इसका एक मात्र रास्ता है और यह है कि यह विश्वास फिर उत्पन्न किया जाए और सबसे पहले इन्सान को इन्सान बनाया जाए। इसके बिना अपराध बन्द नहीं हो सकते, दोष दूर नहीं हो सकते। आप एक चोर दरवाज़ा बन्द करेंगे, दस चोर दरवाजे खुल जायेंगे। खेद है कि जिनको इस मौलिक कार्य करने की ओर ध्यान देने की आवश्यकता है और जिनके ध्यान देने से प्रभाव पड़ सकात है उनको अन्य समस्याओं से फुर्सत नहीं। यदि वह इस विषय की ओर आकृष्ट होते तो इससे समस्त जीवन पर प्रभाव पड़ता और सैकड़ों समस्यायें इससे हल हो जातीं, जिस पर पृथक रूप से किये जा रहे हैं और सन्तोषजनक निष्कर्ष नहीं निकलता।

हमारे प्रयास एवं परिश्रम का प्रेरक–

हमने जब देखा कि इतने लम्बे चौड़े देश में कोई आवाज उठाने वाला नहीं और कोई इसको अपने जीवन का उद्देश्य और अभिमान का रूप प्रदान करने वाला नहीं तो हम और हमारे कुछ साथी इस आवाहन हेतु अपने घर से निकले, हम आपके नगर में आये, आपने हमें मान्यता प्रदान की और रुचि एवं शान्ति पूर्वक हमारी बात सुनी, इसके लिए हम आपके आभारी हैं और इससे हमें प्रोत्साहन मिलता है, हम इसी आशा पर निकले हैं कि मनुष्यों की इस विस्तृत नगरी में अवश्य कुछ उत्साह युक्त व्यक्ति पाये जाते है। संसार का प्रत्येक

कार्य इन्हीं व्यक्तियों के अस्तित्व एवं विश्वास और उन्हीं के साहसपूर्ण एवं उत्साह की आस्था पर किया गया है। हम इस बात की भी आशा करते हैं कि वह अपने को ऐसा व्यक्ति बनाने का प्रयास करेंगे जिसकी आज दुनिया को आवश्यकता है और जिसके बिना इस ज़िन्दगी की चूल बैठ नहीं सकती।

रिवाजी सम्मेलन-

मित्रो एवं भाइयों! इस समय हमारे देश में सम्मेलनों तथा समारोहों का बहुत रिवाज है। परन्तु यह सम्मेलन तथा समारोह दो प्रकार के होते हैं। एक वह जो बिल्कुल व्यक्तिगत स्वार्थ एवं उद्देश्य हेतु आयोजित किये जाते हैं। चाहे उसके पीछे कोई संस्था अथवा राजनीतिक दल कार्य करता हो या किसी संस्था एवं दल का नाम लिया जाता हो। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण चुनाव के समारोह हैं, एलेक्शन की बदौलत नगर–नगर, गाँव–गाँव जलसे होते हैं और उनके लिए कठोर परिश्रम किया जाता है। जो लोग किसी क्षेत्र से निर्वाचन हेतु खड़े होते हैं वह मतदाताओं को विश्वास दिलाते हैं कि वह निर्वाचन हेतु अति उपयुक्त एवं योग्य उम्मीदवार हैं। इन सभाओं में जीवन के सिद्धान्त, नैतिकता एवं योग्य नागरिक बनने की शिक्षा नहीं दी जाती। उनकी रुचि केवल इसमें होती है कि उनको अधिक से अधिक वोट मिल जाये। उनके निकट वही लोग प्रशंसनीय हैं तथा उन्हीं के अस्तित्व का मूल्य है जो उनका समर्थन करें और उनको वोट दें, चाहे वह नैतिक दृष्टिकोण से कितने ही गिरे हुए हों, चरित्र एवं आचरण की दृष्टि से तुच्छ एवं हीन व्यक्ति हों।

दूसरी प्रकार की वह सभायें होती हैं जो धार्मिक रीतियों अथवा सामाजिक उत्सवों के सम्बन्ध में आयोजित की जाती हैं। इस प्रकार की सभायें मुसलमानों में भी होती हैं और हिन्दुओं में भी, परन्तु खेद की बात है कि धार्मिक सभायें जो कभी जातियों में जीवन की एक लहर उत्पन्न करने का साधन होती थीं और सुधार एवं परिवर्तन का सन्देश देती थीं, अब कोई संदेश तथा प्रोग्राम नहीं रखतीं। इसी प्रकार वे सामाजिक उत्सव जिनके द्वारा सुधार एवं सामाजिकता का कार्य लिया जाता था, एक प्रकार से नीरस तथा निर्जीव हो गए हैं और एक लगे बंधे प्रोग्राम के अन्तर्गत सम्पन्न होने लगे हैं।

प्रभावहीन सम्मेलन-

इन सम्मेलनों तथा सभाओं में लोग जो विचार लेकर आते हैं, वही विचार लेकर जाते हैं। उनमें कोई सुधार एवं परिवर्तन नहीं होता, बल्कि इन सभाओं में सम्मिलित होने से एक प्रकार का आत्म संतोष उत्पन्न होता है। इनमें सम्मिलित होने वाला समझने लगता है कि सम्मिलित होने से वह हल्का और पवित्र हो गया और उसने जो पाप किये थे, वह धुल गए। आज धर्म से व्यक्तियों के मन एवं मस्तिष्क पर चोट नहीं लगती, धार्मिक सभाओं में सम्मिलित होने से शान्ति एवं संतुष्टि में अभिवृद्धि हो जाती है।

धर्म अशुद्ध एवं असत्य जीवन का प्रतिद्वन्द्वी है- यद्यपि धर्म असत्य जीवन का विरोधी है।

शेष पृष्ठ .....32... पर

इख़्लास और उसके बरकात व फायदे

प्रस्तुतिः जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी —मौ0 सैय्यद अब्दुल्लाह हसनी नदवी रह0

अल्लाह वालों का हाल–

जब अल्लाह वालों का दिल ठीक हो जाता है तो जन्नत का मज़ा हर वक्त उनको यूंही आता है, हज़रत मौलाना रह0 के जो पीर थे शाह अब्दुल क़ादिर साहब रह0, वह अपने पीर शाह अब्दुर्रहीम साहब रह0 का वाक़िया नक़ल करते हैं कि वह एक प्याली चाय, एक चपाती रोटी दो चार दिन में खा ली तो खा ली, कहते हैं मैंने कहा हज़रत बहुत कमज़ोरी हो जायेगी, जब कई रोज़ कह चुके तो कहने लगे जन्नत का मजा आ रहा है, क्या खिला रहे हो? तो इन लोगों को मजा जन्नत का आता है, इसलिए इनको कहीं परेशानी नहीं होती, हर वक्त इतमीनान से रहते हैं, किसी गुस्से वाली बात पर गुस्सा नहीं होते, क्योंकि अंदर से ठंडे होते हैं जैसे किसी को कोई बच्चा मार दे तो वह मुस्कुराता है और बच्चे पर नाराज नहीं होता, क्योंकि उसकी मार से चोट नहीं लगती, इसी तरह यह लोग भी दूसरों को उसी नज़र से देखते हैं, और जो खुद गुस्सा हो जाये और भड़क जाये तो समझ लीजिए कि वह बड़ा नहीं है, उसकी बहुत सारी मिसालें हैं, जैसे जो बड़ा होगा उसको छोटी चीज़ नज़र आयेगी इसलिए कि बड़े की रौशनी तेज होती है तो उसको सूई भी नज़र आ जायेगी, छोटे का बल्ब ज़ीरो होता है इसलिए पहाड़ भी नज़र नहीं आता है, इसीलिए बड़े लोग छोटी चीज़ का खयाल रखते हैं, और छोटे लोग बड़ी चीज़ का भी ख़ायाल नहीं रखते हैं, बुजुर्गाने दीन छोटी छोटी चीज़ों का भी एहतिमाम करते हैं, जैसे टखने से नीचे पायजामा न हो, दाहिने पैर से दाखिल हो वगैरह, इसका वह इसलिए एहतिमाम करते हैं कि वह बड़े होते हैं, इसी प्रकार खिदमत से अल्लाह तआला बहुत करम फरमाता है और इससे बड़ी उन्नति हासिल होती है, हज़रत सैय्यद अहमद शहीद रह0 जब तक तक्ये में रहते थे, घर की औरतों, बेवाओं, ज़रूरत मंदों सबके घर जा जा कर पूछते थे कि तुम को क्या ज़रूरत है? सब की ज़रूरतें मालूम करके उनकी पूरी करते, किसी के लिए लकड़ी काट दिया, किसी का पानी भर दिया, किसी का सौदा बाज़ार से ला कर दे दिया यह बचपन ही से उनका मामूल था यह वह चीज़ है जिसको यूं कह लीजिऐ कि मोटर 40 की स्पीड़ से भी चलती है और 250 की स्पीड़ से भी चलती है, तो जो इस प्रकार का काम करता है, उसकी मोटर 250 की स्पीड से जाती है, इसलिए कि अल्लाह तआला को यह काम बहुत पसंद हैं कि उसके बन्दे की मदद की जाये, और अल्लाह के लिए की जाये और लोगों से छुपा कर की जाये।

अल्लाह देख रहा है-

हज़रत उमर रज़ि0 के ज़माने में जब किस्रा का ताज एक सिपाही के हाथ लगा, ताज इतना क़ीमती था कि अगर वह उठा कर ले जाता तो दो तीन पुशतें खातीं, हीरे जवाहिरात लगे हुए थे, लेकिन वह चुपके से गया, और अपने कमांडर इन चीफ को जाकर दे दिया और कहा कि हज़रत उमर रज़ि0 को दे दो, हज़रत उमर को जा कर उसने दिया तो हज़रत उमर रज़ि0 को हैरत हुई कि इतने ईमानदार लोग मौजूद हैं, पूछा की तुम्हारा नाम क्या है? उसने कहा जिसके लिए मैंने यह काम किया है वह मेरा नाम जानता है, हम अल्लाह के लिए ले कर आये हैं, और ताज दे कर वह खामोशी से चला गया और यही अस्ल है, अल्लाह जो दिलों के भेद को जानता है, हम उसके लिए जब काम करेंगे तो बताने की क्या ज़रूरत है, बताना अक्सर इसलिए होता है कि यह मेरा कारनामा है मैंने किया है, जब अपने करने को उसने ज़ाहिर कर दिया तो अल्लाह ने भी कहा कि ठीक है तुम जाओ, इसलिए इख़्लास बहुत गैर मामूली चीज़ है और उसके बगैर कुछ मिलने वाला नहीं।

हज़रत उमर रज़ि0 का बहुत मशहूर वाकिया है कि रात में आप पहरा दे रहे थे और विभिन्न गलियों में आप चक्कर लगा रहे थे, एक गली में जब दाखिल हुए तो एक औरत अपनी बेटी से कह रही थी कि बेटी दूध में पानी मिला दे, तो बेटी ने कहा कि अमीरुलमोमिनीन हज़रत उमर रज़ि0 का फरमान आया है कि दूध में पानी न मिलाया जाये, तो उसकी माँ ने कहा : बेटी अभी अंधेरा है, फज्र भी नहीं हुई, अमीरुलमोमिनीन कहां देख रहे हैं? चुपके से दूध में पानी मिला दो, बेटी ने कहा कि अम्माँ! अमीरुलमोमिनीन तो नहीं देख रहे हैं, लेकिन अमीरुलमोमिनीन के खुदा तो देख रहे हैं, हज़रत उमर ने उस घर पर निशान लगा दिया कि यह घर बड़ा ईमानदार है, बच्ची बड़ी ईमानदार है, फिर उसके बाद हज़रत उमर रज़ि0 ने अपने बेटे की शादी उस लड़की से की, उसी से हज़रत उमर बिन अब्दुल अजीज़ रज़ि0 के बाप पैदा हुए, उस लड़की ने अल्लाह के लिए काम किया तो अल्लाह ने कितना बड़ा तोहफा दिया, हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रज़ि0 जैसा इन्सान पैदा हुआ। जिसने सारे आलम में तहलका मचा दिया, तो यह इख़लास है, यानी अल्लाह के हुक़्म से और उसी के डर से काम करना, न कि किसी और के हुक़्म और डर से, हम कर रहे हैं कि अल्लाह का हुक़्म है अल्लाह के लिए काम करने से जितनी तरक़्क़ी होती है वह किसी और चीज़ से नहीं होती है, अल्लाह तआला हमारे बातिन को इख़लास के नूर से मुनव्वर फरमाये हर काम में हुस्ने नीयत अता फरमाये।

आमीन!

❖❖❖

भ्रष्टाचार मुक्त समाज कैसे?

—मुहम्मद अली शाह शुऐब

पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गाँधी ने कहा था कि विकास के मद में दिये गये एक रूपये में से 15 पैसे ही ग़रीबों तक पहुँच पाते हैं। विचार करने वाली बात यह है कि किसी साधारण व्यक्ति ने यह बात नहीं कही है, बल्कि देश के पूर्व प्रधानमंत्री ने कही थी। विचार किया जाए तो स्थिति आज भी नहीं बदली है, बल्कि पहले से भी ख़राब है। अधिकारी से ले कर चपरासी तक भ्रष्टाचार में लिप्त हैं। इसलिए आज तो गारंटी के साथ यह भी नहीं कहा जा सकता कि वे 15 पैसे भी आम लोगों तक पहुँच रहे हैं। कांग्रेस उपाध्यक्ष राहुल गांधी का यह आरोप है कि उत्तर प्रदेश के ग़रीबों तक तो केन्द्र से चले एक रूपये के पाँच पैसे भी नहीं पहुँच पाते हैं।

सच है कि आज़ादी के बाद 66 सालों में हमने बड़ी तरक्की की है। यह भी बताया जाता है कि हमारी आर्थिक स्थिति भी मज़बूत हुई है। किन्तु भारत की आंतरिक और वास्तविक स्थिति कुछ और ही कहानी बयान कर रही है। देश के असंगठित क्षेत्र पर अध्ययन हेतु गठित अर्जुन सेन गुप्ता कमेटी की रिपोर्ट के अनुसार, भारत में लगभग 84 करोड़ लोग 20 रूपये प्रतिदिन पर गुज़ारा करने पर मजबूर हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि देश की लगभग 77 प्रतिशत जनसंख्या आधे पेट सोती है। संयुक्त राष्ट्र की संस्था वर्ल्ड फूड प्रोग्राम की एक रिपोर्ट से ज्ञात होता है कि दुनिया के 25 प्रतिशत भूखे लोग भारत में रहते हैं। बताया जाता है कि लगभग तीन–चौथाई महिलाएं और बच्चे समुचित आहार न मिलने के कारण रोग ग्रस्त हैं। इसका परिणाम यह निकल रहा है कि देश में पैदा होने वाला हर चौथा बच्चा कम वज़न होता है।

देश की दुर्दशा विभिन्न क्षेत्रों में

स्वास्थ्य– हमारे देश में स्वास्थ्य का स्तर दिन–प्रतिदिन गिरता जा रहा है। कई घातक क़िस्म की बीमारियों (जैसे टी0बी0, एड्स, मधुमेह, कैंसर इत्यादि) के संबंध में भारत पूरी दुनिया में अग्रणी देशों में गिना जाता है। न तो खाने को पर्याप्त भोजन है और न पीने के लिए साफ़ पानी उपलब्ध है। यूनीसेफ़ की रिपोर्ट के अनुसार ग्रामीण क्षेत्रों की लगभग 90 प्रतिशत जनसंख्या को पीने के लिए साफ़ पानी उपलब्ध नहीं है।

शिक्षा– हमारे देश में शिक्षा का स्तर 1951 ई0 के 19 प्रतिशत के मुक़ाबले में 67 प्रतिशत तो हो गया है लेकिन दुनिया के अशिक्षित देशों में आज भी अग्रणी ही है। और क्यों न हो जब कि आज भी देश में 30 करोड़ लोग निरक्षर हैं। कई करोड़ बच्चे ऐसे हैं जो पाँच से आठ साल स्कूल में गुज़ारने के बाद बड़ी

मुश्किल से कुछ पढ़ना–लिखना ही सीख पाते हैं। जबकि पाँच करोड़ बच्चे ऐसे हैं जिन्होंने स्कूल की शक्ल ही नहीं देखी है।

यदि देश की इस दुर्दशा पर दृष्टि डाली जाए तो स्पष्टतः ज्ञात हो जाता है कि इसका कारण देश में व्याप्त भ्रष्टाचार है। ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल की एक रिपोर्ट के अनुसार भारत भ्रष्ट देशों में 79वें पायदान से चढ़ कर 94वें पायदान पर विराजमान है। एक आंकड़े के अनुसार भारत में हर साल लगभग 5 बिलियन डॉलर रक़म रिवश्त के रूप में ली दी जाती है। यह भ्रष्टाचार ही है जिसके कारण भारत तमाम तरिक़्क़यों के बावजूद आगे नहीं बढ़ पा रहा है। भारत में इतना अनाज पैदा होता है कि देश की पूरी जनता के लिए पर्याप्त हो सकता है (किन्तु रख–रखाव का उचित प्रबंध न होने और भ्रष्टाचार के कारण हर साल करोड़ों टन अनाज गोदामों में सड़ जाता है। मगर ग़रीबों और भूखों तक नहीं पहुंच पाता। सर्वोच्य न्यायालय की चेतावनी का भी कोई असर नहीं होता कि अनाज को सड़ाने से अच्छा है कि ग़रीबों को सस्ते दामों पर दे दिया जाए। मानो हमारे देश के कर्ता–धर्ता नैतिक गिरावट की अन्तिम सीमा को भी लांघ चुके हैं और अनैतिकता के गर्त में पहुंच चुके हैं।

भ्रष्टाचार का अर्थ है 'निजी हित के लिए अपने अधिकारों (पद आदि) को अनुचित और ग़लत प्रयोग।' अर्थात जब कोई व्यक्ति अपने निजी हित हेतु अपने पद अथवा अधिकार का ग़लत प्रयोग करता है तो उससे दूसरे बहुत से लोगों के अधिकारों का हनन होता है जिससे लोगों में अविश्वास को बढ़ावा मिलता है। फिर वे भी अपने जायज़ अधिकारों को पाने हेतु ग़लत और गैर क़ानूनी काम करने पर मजबूर हो जाते हैं।

देश में भ्रष्टाचार आम है– भ्रष्टाचार का अर्थ है 'निजी हित के लिए अपने अधिकारों (पद आदि) का अनुचित और ग़लत प्रयोग' अर्थात जब कोई व्यक्ति अपने निजी हित हेतु अपने पद अथवा अधिकार का ग़लत प्रयोग करता है तो उससे दूसरे बहुत से लोगों के अधिकारों का हनन होता है जिससे लोगों में अविश्वास को बढ़ावा मिलता है। फिर वे भी अपने जायज़ अधिकारों को पाने हेतु ग़लत और ग़ैर क़ानूनी काम करने पर मजबूर हो जाते हैं। इस प्रकार पूरे समाज में एक अफ़रा–तफ़री मच जाती है। हम भली भांति जानते हैं कि यह भ्रष्टाचार किसी भी समाज के लिए कैंसर के सदृश है। जब यह समाज में फैल जाता है तो पूरे समाज को तबाह करके रख देता है और लाख प्रयासों के बाद भी इसका कोई हल नज़र नहीं आता है।

हम देख रहे हैं कि हमारा समाज आज तबाही के दहाने पर खड़ा है। इस भ्रष्टाचार को समाप्त करने की मांग भी चारों ओर से हो रही है और प्रयास भी ख़ूब किये जा रहे हैं। मगर 'मर्ज़ बढ़ता गया

जूं–जूं दवा की, वाली मिसाल चरितार्थ होती नज़र आती है। आज हम देख रहे हैं कि भ्रष्टाचार को समाप्त करने वाली जितनी संस्थाएं हो सकती हैं वे स्वयं भ्रष्ट हैं।

राजनीतिक पार्टियों में भ्रष्टाचार- सबसे पहले आशा की जाती है कि राजनीतिक पार्टियां समाज को भ्रष्टाचार की तबाही से बचाने का प्रयास करेंगी। किन्तु जितनी अधिक इनकी ज़िम्मेदारी है उतनी ही अधिक ये पार्टियां भ्रष्ट नज़र आती हैं। कोई व्यक्ति मामूली सा नगर पालिका सदस्य या विधायक बन जाता है, तो अपनी आगे की नस्ल का भी प्रबंध कर लेता है। देश में जितने बड़े–बड़े घोटाले हुए हैं, उनमें राजनीतिक हस्तियां लिप्त पायी गयी हैं। चारा घोटाला (नौ सौ चालीस करोड़ रूपये), हवाला घोटाला (18 मिलियन अमेरिकी डॉलर), बोफ़ोर्स घोटाला (64 करोड़ रूपये), कॉमन वेल्थ गेम घोटाला (70 हज़ार करोड़ रूपये), 2 जी स्पेक्ट्रम घोटाला (136 लाख करोड़ रूपये), कोयला घोटाला (एक लाख 86 हज़ार करोड़ रूपये) वे बड़े–बड़े घोटाले हैं जो ख़ूब चर्चा में रहे हैं और देश का बच्चा–बच्चा इनको जानता है। वे घोटाले जो सामने नहीं आ पाते उनकी संख्या का आप स्वयं अनुमान लगा सकते हैं कि वे इन से कितने अधिक होंगे। इन घोटालों ने देश की कमर तोड़ कर रख दी है।

कोयला घोटाले को लेकर भारतीय जनता पार्टी ने भी बहुत शोर मचाया, यहां तक कि संसद को भी नहीं चलने दिया था। इनके इस व्यवहार से प्रतीत होता था कि ये लोग देश के बड़े हितैषी हैं। किन्तु कौन नहीं जानता कि भाजपा के सत्ताकाल में कारगिल ताबूत घोटाला हुआ और कर्नाटक के मुख्यमंत्री येदयूरप्पा स्वयं भूमि घोटाले में लिप्त पाये गये। हवाला घोटाले में लालकृष्ण आडवाणी और मदनलाल खुराना आरोपी रहे हैं।

प्रशासनिक सेवाओं में भ्रष्टाचार- देश की प्रशासनिक सेवा के अधिकारियों से भी आशा की जाती है कि वे समाज से भ्रष्टाचार को दूर करने में अपना योगदान करेंगे, किन्तु रिपोर्ट से मालूम होता है कि यहां भी भ्रष्टों की कमी नहीं है, बल्कि राजनीतिक हस्तियां जो घोटाले करती हैं उनमें इनकी भी कहीं न कहीं भागीदारी होती है। इसके अतिरिक्त यहां भी घोटालों की एक लंबी सूची मौजूद है। खाद्यान्न घौटाला (2 लाख करोड़ रूपये), फ़्यूचर ट्रेडिंग घांधली (314 करोड़ रूपये), सी0आर0पी0एफ0 भर्ती घोटाला (225 करोड़ रूपये) के आई0ए0डी0बी0 प्रोजेक्ट घोटाला (107 करोड़ रूपये) वे बड़े–बड़े घोटाले हैं जो सामान्य रूप से ली जाने वाली घूस के अतिरिक्त हैं।

पुलिस विभाग में भ्रष्टाचार- अब रह जाता है पुलिस विभाग, जिससे समाज की सुरक्षा एवं भ्रष्टाचार उन्मूलन की सशक्त आशा की जाती है, किन्तु इस विभाग के भ्रष्ट होने पर तो कुछ कहने की आवश्यकता ही नहीं है। इसका हाल तो हम चौराहे पर खड़े हो कर देख सकते

हैं। ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल के एक सर्वेक्षण के अनुसार देश के 25 लाख बी0पी0एल0 धारक ग़रीबों को भी अपना जायज़ काम कराने के लिए पुलिस को घूस देनी पड़ती है। कहने का तात्पर्य यह है कि पुलिस विभाग भी उतनी ही भ्रष्ट है जितनी की उपर्युक्त संस्थाएं। इस भ्रष्टाचार में केवल एक पुलिस वाला ही लिप्त नहीं है, बल्कि जितना बड़ा पद उतनी बड़ी गांठ। तेलगी फ़र्ज़ी स्टाम्प घोटाले (43 हज़ार करोड़) में मुम्बई के पूर्व पुलिस आयुक्त और कई अन्य पुलिस अधिकारी लिप्त पाये गये।

कहने का तात्पर्य यह है कि देश में क़ानून और व्यवस्था लागू करने की ज़िम्मेदारी जिन संस्थाओं और विभागों पर है वे भी भ्रष्टाचार के दलदल में धंसे हुए हैं। ऐसा लगता है कि पैसा ही इनके लिए सब कुछ है। प्रिंट एवं इलेक्ट्रानिक मीडिया भी, जो कि लोकतंत्र का चौथा शक्तिशाली स्तम्भ मानी जाती है, इस भ्रष्टाचार से अछूती नहीं रह गयी है।

जनता में भ्रष्टाचार- मामला केवल इतना ही नहीं है कि देश का सरकारी तंत्र भ्रष्टाचार में लिप्त है, बल्कि वास्तविकता यह भी है कि इस भ्रष्टाचार के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाने वाली जनता भी कुछ कम नहीं है। ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल की 2005 की रिपोर्ट के अनुसार देश की 62 प्रतिशत जनता घूस देने का तर्जुबा रखती है। अर्थात जनता भी ग़ैर–क़ानूनी कामों में इस प्रकार लिप्त है कि उनके अन्दर यह हौसला ही नहीं रह गया है कि वह भ्रष्टाचार और भ्रष्ट लोगों के ख़िलाफ़ आवाज़ उठा सकें। बच्चे का स्कूल में दाख़िला कराना हो, नौकरी हासिल करनी हो या कोई और काम निकलवाना हो, किसी काम में कोई रिश्वत देने से नहीं चूकता, बल्कि इस पर खुश होते हैं कि उनका काम हो गया। जनता को भी मालूम है कि यदि भ्रष्टाचार समाप्त हो गया तो न तो बिजली की चोरी हो पाएगी और न अन्य काम पीछे के दरवाज़े से हो पाएंगे।

ऐसा भी नहीं है कि इस भ्रष्टाचार को रोकने के प्रयास नहीं किये जा रहे हैं, बल्कि भ्रष्टाचार के उन्मूलन के लिए क़ानून भी बनाये जा रहे हैं, बहुत से ग़ैर सरकारी संगठन भी काम कर रहे हैं। बहुत से आन्दोलन भी चलाए जा रहे हैं। बल्कि एक आन्दोलन जो अन्ना हज़ारे ने चलायाथा उसी से एक और पार्टी राजनीतिक क्षितिज पर प्रकट हुई है। उस पार्टी का नाम है "आम आदमी पार्टी" इसका नारा है कि समाज को भ्रष्टाचार से मुक्त करेंगे।

निश्चित रूप से यह कहा जा सकता है कि भ्रष्टाचार ने अपने पंजों को जिस मज़बूती के साथ गाड़ रखा है उनको उखाड़ना कोई आसान काम नहीं है। यह काम केवल सत्ता को चलाने वाले हाथों को बदल देने मात्र से होने वाला नहीं है, बल्कि कई स्तरों पर आमूल परिवर्तन की आवश्यकता है।

भ्रष्टाचार कैसे समाप्त हो?

जब हम भ्रष्टाचार को समाप्त करने पर विचार करते हैं तो सबसे पहला और महत्वपूर्ण प्रश्न हमारे सामने

यह आता है कि इस भ्रष्टाचार का मूल कारण क्या है? यदि कारण का पता लग जाए तो उन्मूलन में आसानी होगी। इस प्रश्न के उत्तर में इस्लाम एक बहुत ही सटीक बात कहता है। उसकी मान्यता है कि भ्रष्टाचार, अत्याचार और अनाचार का एक ही मूल कारण है। वह है मनुष्य का अपने आपको स्वच्छंद समझना, अर्थात अपने आपको किसी सत्ता के समझ उत्तरदायी न समझना। जब मनुष्य अपने आपको स्वच्छंद समझता है तो वह अपने जीवन को सुखमय बनाने के लिए संभव प्रयास करता है, चाहे उसके लिए उसे किसी पर अत्याचार ही क्यों न करना पड़े। इसी से मनुष्य के अन्दर 'खाओ, पियो और मौज करो' की धारणा परवान चढ़ती है।

जब मनुष्य अपने जीवन का लक्ष्य केवल 'खाना, पीना और मौज करना' ही बना लेता है तो वह इस जीवन में किसी नैतिक नियम का पालन करने हेतु तैयार नहीं होता। वह हर उस काम को कर गुज़रता है जिसमें उसे लाभ हो। अतएव इस्लाम इस बात का तो पक्षधर है ही कि भ्रष्टाचार उन्मूलन के लिए सख़्त से सख़्त क़ानून बनने चाहिएं, लेकिन इसके अतिरिक्त मुख्य रूप निम्नलिखित दो उपाय और भी बताता है, जो कि भ्रष्टाचार के उन्मूलन में मुख्य भूमिका निभाते हैं–

(कान्ति पत्रिका, अगस्त 2014 से ग्रहीत)

❖❖❖

अपनी औलाद की.....

(अप्रचित) हो जाते हैं, वह अपने दीन से गाफिल होते हैं, अगर जानते हैं तो सिर्फ इतना कि हम मुसलमान हैं लेकिन साथ साथ यह तअस्सुर (प्रभाव) भी दिमाग़ पर छाया होता है कि हमारा दीन ज़िन्दा नहीं और न हमारे यहां कोई बड़ा आदमी पैदा हुआ, स्कूलों की इस तालीम ने अपने खुले असरात पैदा करने शुरु कर दिये हैं, इन हालात ने हर दीनी जज़्बात रखने वाले वालिदैन को बे करार कर रखा है, ज़रूरी है कि तमाम मुसलमान वालिदैन अपनी औलाद पर निगाह रखें, वह अपने बच्चों को ऐसे मकातिब में दाखिल करें जहाँ आम किताबों के साथ साथ कुरआन मजीद नाजिरा और दीनी किताबें दाखिल हों।

अगर ऐसा करना मुश्किल हो तो जब बच्चा स्कूल से पढ़ कर आये तो उससे पूछें कि आज क्या पढ़ा? और जो कुछ उसने अपने दीन के खिलाफ पढ़ा हो उसके ज़हर से उसको बचायें। खारजी अवक़ात में उसको ऐसे उस्तादों के हवाले करें जहां वह अपने दीन से वाकिफ और खबरदार हों, जगह जगह ऐसे मकातिब खोलें जिनमें ऐसा निसाब राइज़ किया जाये जो ज़बान और दुन्यावी ज़रूरी उलूम के साथ साथ दीन के अक़ाइद और आमाल पर हावी हों, यह चन्द सूरतें हैं जिनकी वजह से हमारी नस्लें कुफ़्र व इल्हाद और शिर्क व बे दीनी से महफूज़ रह सकती हैं।

❖❖❖

आपके प्रश्नों के उत्तर ?

—मुफ्ती ज़फर आलम नदवी

प्रश्नः ताजिया दारी का क्या हुक्म है?

उत्तरः प्रचलित (मुरव्वजा) ताजिया दारी तमाम उल्मा के नज़दीक नाजाइज़ है, देवबन्दी उलमा इसे नाजाइज़ कहते ही हैं, बरेलवी मस्लक के सभी उलमा इसे नाजाइज़ बताते हैं, आला हज़रत मौलाना अहमद रज़ा खाँ का तो ताज़िया दारी के नाजाइज़ होने पर एक किताबचा (पुस्तिका) भी है, उनके बेटे मुस्तफ़ा खाँ रजा, उनके ख़लीफ़ा मौलाना हशमत अली खाँ ने ताजिया दारी को नाजाइज़ लिखा है बरेलवी मदारिस के एक बड़े आलिम मौलाना अमजद अली साहिब ने भी अपनी मशहूर किताब बहारे शरीअत में ताज़िया दारी को नाजाइज़ लिखा है, लिहाज़ा हमारे जो भाई अपनी नासमझी से ताज़िया दारी की बिदअत में मुबतला हैं उनको समझना चाहिए और ताज़िया दारी को छोड़ देना चाहिए।

प्रश्नः प्रचलित ताज़िया दारी नाज़ाइज कही जाती है क्या कोई ताज़िया दारी ज़ायज़ भी है?

उत्तरः ताज़िया जिसको हम ताज़ियत भी कह सकते हैं, यह ताज़ियत इस्लाम में सुन्नत है, किसी के देहान्त (इन्तिक़ाल) पर उसके घर वालों से मिल कर हमदर्दी करना और उनको तसल्ली देना ताजियत कहलाता है यह ताज़ियत मरने वाले के घर वालों के साथ मरने के दिन से तीन दिन तक सुन्नत है।

प्रश्नः किसी की वफ़ात पर या शहादत पर गम मनाना कैसा है?

उत्तरः किसी मुसलमान की वफ़ात या शहादत पर उसके घर वालों के लिए तीन रोज़ तक गम मनाना जाइज़ है, अलबत्ता मरने वाले की बीवी के लिए ग़म की मुद्दत चार माह दस दिन है, उसके बाद ग़म ज़ाहिर करने की इज़ाज़त नहीं, अलबत्ता अगर किसी पर गैर इख़्तियारी तौर पर ग़म का असर रहे तो यह उसके लिए मुआफ़ है।

प्रश्नः ग़म मनाने से क्या मुराद है?

उत्तरः ग़म मनाने का यह मतलब है कि मरने वाले के मुतअल्लिक़ीन के अगर आँसू बह रहे हैं तो वह रो लें मगर बैन न करे, न कपड़े फाड़े न मुँह पीटे, न सीना पीटे, नीज कोई खुशी न मनाएं, मरने वाले की बीवी चार माह दस दिन तक सोग में रहे, मगर वह भी वावेला न करे सीना न पीटे बैन न करे, वह चार माह दस दिन तक अपनी बदन की सजावट न करे, अपने घर ही में रहे बे ज़रूरत घर से बाहर न निकला करे न सफर करे आदि।

प्रश्नः मुहर्रम में हज़रत हुसैन रजियल्लाहु अन्हु की शहादत याद करके ग़म मनाना कैसा है?

उत्तरः सय्यिदुना हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत

को 1325 वर्ष गुज़र गये अब उनकी याद में ग़म मनाने की शरीअ़त में गुंजाइश नहीं, अगर उनकी मुसीबतें याद आने पर दिल भर आए और आँखें नम हो जाएं तो कोई हरज नहीं मगर आपकी शहादत का ज़िक्र करके ग़म ताज़ा करना और उस पर नोहा पढ़ कर ग़म मनाना जाइज़ नहीं।

सहा–बए–किराम ने हज़रत नबीये पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफात को सबसे ज़ियादा ग़म का हादिसा समझा था और उसका इतना असर हुआ था कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु जैसे जरी इन्सान ने अपने हवास खो दिये थे, लेकिन फिर हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफ़ात की तारीख़ हर साल आती रही कोई एक रिवायत भी नहीं मिलती कि सहा–बए–किराम ने कभी आपका गम मनाया हो खुद नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के महबूब चचा हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु ग़जवए उहुद में शहीद हुए उसके बाद सय्यिदुश्शुहदा की शहादत की तारीख़ बार बार आई मगर हमारे हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कभी ग़म की तारीख़ न मनाई बिइरे मऊना में 69 सहाबा शहीद कर दिये गये हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बड़ा दुख हुआ, आपने महीनो शहीद करने वालों को नमाज़ में बद दुआ दी मगर फिर बार बार उनकी शहादत की तारीख़ आई आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कभी उनकी शहादत की तारीख़ पर ग़म न मनाया न सहाबा ने ग़म मनाया, इन बातों से मालूम हुआ कि इस्लाम में किसी मरने वाले या शहीद हो जाने वाले की याद में साल दर साल ग़म मनाने की गुंजाइश नहीं है लिहाज़ा हम को चाहिए कि हम हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत का ग़म हर साल मुहर्रम में मनाने की रस्म को छोड़ दें कि शरअ़न यह जाइज़ नहीं है।

प्रश्नः क्या हज़रत हुसैन रजियल्लाहु अन्हु के अलावा किसी और शहीद का ताज़िया रखा जाना साबित है?

उत्तरः बिल्कुल नहीं खुद हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अहदे मुबारक में सय्यिदुश्शुहदा हम्ज़ा के अलावा कितने सहाबा शहीद हुए जिन की शहादत पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हद दरजे मलूल हुए मगर किसी का ताज़िया न रखा खली–फ़ए–सानी हज़रत उमर रज़ि0 की शहादत पर सहा–बए–किराम ने ताज़िया न रखा, हज़रत उस्मान रज़ि0 की हद दर्जे मजलूमाना शहादत पर सहा–बए–किराम ने ताजिया न रखा न हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत पर हज़रत हसन और हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने ताज़िया रखा, हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत पर हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु ने ताज़िया न रखा, हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत पर उनके बेटे हज़रत जैनुल आबिदीन रह0 ने ताज़िया न रखा, सोचने की बात है कि क्या कोई हज़रत जैनुल आबिदीन से ज़ियादा हुसैन रज़ि0 से महब्बत का दावा

कर सकता है? हरगिज़ नहीं फिर भी उन्होंने अपने शहीद वालिद की याद में ताज़िया न रखा तो हम को समझना चाहिए कि अस्ल में किसी शहीद की याद में ताज़िया रखना जाइज़ न था इसी लिए इन बुज़ुर्गों ने किसी शहीद की याद में ताज़िया न रखा।

प्रश्नः हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु से महब्बत का क्या हुक्म है?

उत्तरः हज़रत हुसैन और उनके बड़े भाई हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हुमा से महब्बत ईमान का जुज़्ज़ है, हम नमाज़ में जो दुरूद पढ़ते हैं उसमें आले मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए अल्लाह तआला से रहमत व बरकत मांगते हैं और आले मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम में हज़रत हसन व हज़रत हुसैन शामिल हैं लिहाजा उनसे महब्बत लाज़िमी है यहां यह बात भी याद रखना चाहिए कि तमाम सहा–बए–किराम जिनमें आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की औलाद भी शामिल हैं और अज़वाज भी इन सबसे महब्बत लाज़िमी है, उनके लिए कुर्आने मजीद में दुआ आई है। कुर्आन मजीद की कई आयतों में एलान है कि अल्लाह उनसे राज़ी हो गया, हदीस में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने साफ़ एलान फरमा दिया है कि जो मेरे सहाबा से महब्बत रखता है वह मेरी महब्बत के सबब महब्बत रखता है और जो मेरे सहाबा से बुग्ज़ रखता है वह मुझ से बुग्ज़ रखता है, लिहाजा किसी सहाबी से बुग्ज़ व इनाद रखने में अपने ईमान का ख़तरा है बेशक सहाबा मासूम न थे उनसे ज़रूर भूल चूक हुई होगी लेकिन उनकी किसी भूल चूक से उनको बुरे नाम से याद करना हराम है। इसी लिए उम्मत के उलमा का फ़ैसला है कि सहाबा की आपस की लड़ाई का ज़िक्र न किया जाए, बाज़ लोग हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में सख़्त जुमले बोल जाते हैं या अपने मज़ामीन में लिख जाते हैं उनको डरना चाहिए। हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु पर मौलाना तक़ी उस्मानी की किताब "हज़रत मुआविया" पढ़ना चाहिए। जवाब के आख़िर में हम यह कुर्आनी दुआ लिखते हैंः ऐ हमारे रब हम सब ईमान वालों की मग़फ़िरत फ़रमा और हम सब से पहले ईमान लाने वाले सहा–बए–किराम की भी मग़फ़िरत फ़रमा और हमारे दिलों को सहा–बए–किराम के बुग्ज़ व इनाद से पाक रख, ऐ हमारे रब तू बड़ा मेहरबान और बड़ा ही रहम करने वाला है। (सू–रए–हश्र)

प्रश्नः दस मुहर्रम के रोज़े का क्या हुक्म है? क्या इस रोज़े का करबला के वाकिये से कोई तअल्लुक़ है?

उत्तरः मुहर्रम को आशूरा का दिन कहते हैं, इस दिन रोज़ा सुन्नत है मगर यह ऐसी सुन्नत है कि सहा–बए–किराम खुद यह रोज़ा रखते थे और अपने बच्चों से यह रोज़ा रखवाते थे। हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह रोज़ा रखा और अपने सहाबा को आशूरा का रोज़ा रखने की तरगीब दी।

आशूरा का रोज़ा यहूदी भी रखते थे लिहाजा उनसे फर्क़ के लिए हमारे हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने आखिरी मुहर्रम में फरमाया कि इनशाअल्लाह आइंदा 10 मुहर्रम के साथ 9 या 11 का रोज़ा मिला कर रखूंगा ताकि हमारा रोज़ा यहूद के रोज़े से अलग होजाए। यह एक हदीस का मफ़हूम है। लेकिन आपको अगला मुहर्रम न मिल सका लेकिन सहा–बए–किराम ने आइन्दा से 10 के साथ 9 या 11 को मिला कर रोज़ा रखना शुरुअ किया। उलमाए उम्मत ने इससे यह समझा कि अकेले 10 मुहर्रम का रोज़ा ना पसंदीदा है यानी मकरूहे तंज़ीही है अब उम्मत का इसपर पर अमल है कि दस के साथ 9 या 11 को मिला कर रोज़ा रखा जाता है। लेकिन अगर किसी में दो दिन रोज़ा रखने की हिम्मत न हो तो वह दस मुहर्रम का रोज़ा रख कर सुन्नत अदा करे, कुछ उलमा की तहक़ीक़ यह है कि अब यहूद यह रोज़ा नहीं रखते इसलिए अब सिर्फ़ 10 मुहर्रम को रोज़ा रखना मकरूह न रहा, अल्लाह बेहतर जाने, अच्छा यही है कि जिसे अल्लाह तौफ़ीक़ दे वह 10 मुहर्रम के साथ 9 या 11 को मिला कर आशूरा का रोज़ा रखे, आशूरा के रोज़े का करबला के हादिसे से कोई तअल्लुक़ नही है।

प्रश्नः अपने ऐबों को छुपाना और दूसरों के ऐबों को बयान करना यहाँ तक कि मीड़िया में देना फेस बुक में देना कैसा है?

उत्तरः दूसरों के ऐबों को, उसको रुसवा करने के लिए ज़ाहिर करना बड़ा गुनाह है। हदीस में आता है कि जो शख़्स अपने भाई के ऐबों को ढूँढता फिरे और उसको रुसवा करने के लिए उन को ज़ाहिर करता है अल्लाह तआला खुद उस को रुसवा करता है और उसका ऐब ज़ाहिर करता है चाहे वह छुप कर ऐब करे।

(जमउल फवाइद 251/2)

एक और हदीस में है कि मुसलमान की आबरूरेज़ी (अपमान) सबसे बुरा सूद है। (मिशकात 429/2)

प्रश्नः बाज़ दीनी कामों को नई तालीम वाले पसन्द नहीं करते जैसे दाढ़ी रखना, टख़ने से ऊपर पैजामा आदि पहनना या सादगी से निकाह करके वलीमा वगैरह करने को बुरा जानते हैं क्या उनका लिहाज़ करते हुए इन दीनी कामों को छोड़ा जा सकता है?

उत्तरः बाज दीनी कामों को न पसन्द करने वाले दीनी इल्म से ना बलद हैं और बड़े घाटे में हैं लेकिन जो लोग किसी की परवाह किये बिना दीनी कामों पर जमे रहते हैं अल्लाह के नजदीक उनकी बड़ी इज्जत है दीन न जानने वालों का ख़्याल करके बाज़ दीनी कामों को छोड़ना बड़ी नादानी है इससे इज्जत हासिल नहीं होती है इज्जत तो दर अस्ल अल्लाह की तरफ से मिलने वाली इज्जत है।

प्रश्नः बाज लोग अपनी बातों में हद से इतना बढ़ जाते हैं कि मरे हुए लोगों की भी बुराई करने को ऐब नहीं समझते शरीअत में ऐसे लोगों के लिए क्या हुक्म है?

उत्तर : ऐसे लोग बड़ा गुनाह करते हैं, जो लोग दुन्या से चले गये उनकी बुराइयों को बयान करना भी गीबत है जो हराम है मुर्दों की गीबत करना ज़िन्दों की गीबत से जियादा सख़्त है हदीस में मुर्दों को बुरा कहने से सख़्ती से रोका गया है और उनकी भलाइयाँ बयान करने का हुक्म दिया गया है।

(किताबुल अजकार "नववी" 151)

प्रश्नः एक शख्स ने किसी की गीबत की अब वह उससे मुआफ़ी चाहता है मगर वह मुआफ नहीं करता तो अब यह क्या करे?

उत्तरः ऐसी सूरत में गीबत करने वाले ने जिस की गीबत की है उसके साथ अच्छा सुलूक करता रहे फिर भी वह मुआफ न करे तो तौबा व इस्तिगफ़ार करे इन्शा अल्लाह गीबत का गुनाह मुआफ हो जायेगा।

(अहया उद्दीन 133/3)

प्रश्नः एक शख्स ने अपने गुनाहों से सच्ची तौबा की अब उसे गुनहगार कहना कैसा है?

उत्तरः सच्ची तौबा से गुनाह धुल जाते हैं, अल्लाह तआला ने अपने नबी से फरमाया "आप फरमा दीजिए कि ऐ मेरे वह बन्दे जिन्होंने अपने ऊपर जियादती करली है (यानी गुनाह कर लिया है) तुम मेरी रहमत से ना उम्मीद (निराश) ना हो, बेशक अल्लाह तआला तमाम गुनाहों को मुआफ कर देंगे (ज़ुमरः 53) हदीस में आता है कि सच्ची तौबा से गुनाह खत्म हो जाता है इसलिए तौबा करने वाले को गुनहगार कहना खुद गुनाह है, हदीस के मुताबिक तौबा करने वाले को गुनहगार कहने वाला खुद उसी गुनाह में मुबतला होगा।

प्रश्नः उलमा से सुना है कि बे नमाज़ियों और माँ–बाप की नाफरमानी करने वालों की दुआएं कबूल नहीं होती हैं, तो ऐसे लोगों को दुआ करने का क्या फाइदा?

उत्तरः उलमा की यह बातें हदीसों के मुताबिक़ हैं लेकिन उनका मक्सद बे नमाज़ी और माँ–बाप की नाफरमानी करने वालों को अल्लाह तआला की तरफ से डाँट बताना और अल्लाह की नाराजगी जाहिर करना है वरना सच्ची तौबा करने वाले की तौबा कबूल होती है जैसा की सू–रए–जुमर में आया है नीज दूसरी आयात और हदीसों से साबित है कि दिल से दुआ करने वालों की दुआ कबूल होती है।

प्रश्नः बाज़ार से एक पड़वा खरीदा गया, देखने में वह दो साल का नहीं लग रहा है, दाँत देखे गये तो वह दाँता भी नही है, ऐसे पड़वे की कुर्बानी दुरुस्त है या नहीं?

उत्तरः दो साल का होना और उसका यक़ीन होना ज़रूरी है, दाँता होना उसकी अलामत (चिन्ह) है उस पर कुर्बानी का जवाज़ मौकूफ (निर्भर) नहीं, अगर पड़वा घर का हो और दो साल होने का यकीन हो तो कुर्बानी दुरुस्त है बाज़ार से खरीदा गया जानवर अगर दाँता नहीं है तो उसकी कुर्बानी दुरुस्त नहीं है।

❖❖❖

मुस्लिम पर्सनल लॉ में अनुचित हस्तक्षेप

—डॉ0 मुहम्मद अहमद

23 अप्रैल 1985 को सुप्रीम कोर्ट ने मुहम्मद अहमद खाँ बनाम शाहबानों बेगम मुक़दमे में जो फैसला सुनाया था और मुसलमानों के विरोध के बाद तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गाँधी ने संसद द्वारा इसके विरोध में क़ानून बनवाकर इसके अमलदरामद पर रोक लगवा दी थी, ठीक वैसा ही फ़ैसला 29 साल के बाद सुप्रीम कोर्ट द्वारा दिया जाना अत्यंत अफ़सोसनाक और निंदनीय हैं यह मुस्लिम पर्सनल लॉ में सीधे हस्तक्षेप है। इसे एक इत्तिफ़ाक़ ही कहेंगे कि ताज़ा फ़ैसला भी अप्रैल के महीने में आया है, जब लोक सभा के लिए मतदन हो रहे हैं।

ऐसे में यह माना जा सकता है कि उस समय भी चुनावी माहौल रहा होगा। बहरहाल इसे जनमत ध्रुवीकरण के तौर पर नहीं देखा जाना चाहिए। गत 26 अप्रैल को शमीम बानो बनाम अशरफ़ ख़ाँ मुक़दमे की सुनवाई करते हुए जस्टिस विक्रमजीत सेन की खंडपीठ ने अपने फ़ैसले में मुस्लिम महिला को इद्दत (तलाक़ के बाद तीन महीने तक) की अवधि पूरे होने के बाद भी पति से गुज़ारा भत्ता लेने का हक़दार ठहराया। पीठ ने कहा कि मुस्लिम महिला (तलाक़ अधिकार संरक्षण) क़ानून की धारा 3 के तहत गुज़ारा भत्ता देने की व्यवस्था सिर्फ़ इद्दत तक सीमित नहीं है। देश के मुसलमानों के लिए मुस्लिम पर्सनल लॉ अनुप्रयोग अधिनियम 1937 द्वारा शासित हैं। यह मुसलमान के लिए मुस्लिम पर्सनल लॉ को निर्देशित करता है जिसमें शादी, महर, तलाक़, रख–रखाव, उपहार, वक़्फ़, इच्छा और विरासत शामिल है। सुप्रीम कोर्ट का ताज़ा फैसला सहज रूप से विवादकारी है, क्योंकि यह इस्लाम की शिक्षाओं के अनुरूप नहीं है। इस प्रकार यह मुस्लिम पर्सनल लॉ में सीधा हस्तक्षेप है। कुछ लोग यह भी कहते हैं कि देश में एक ही नागरिक क़ानून होना चाहिए, जिसका भारतीय संविधान समर्थन करता है। इसके अनुच्छेद 44 (नीति निर्देशक तत्व) में समान सिविल कोड की परिकल्पना की गयी है। इसके हवाले से सुप्रीम कोर्ट केन्द्र सरकार को पहले सुझाव दे चुकी है कि पूरे देश में समान सिविल कोड लागू करे। संघ परिवार इसके लिए बहुत लालायित दिखता रहा है, जब कि यह सच्चाई सबको पता है कि भारत जैसे बहुधार्मिक और बहुसांस्कृतिक देश में इसे लागू कर पाना असंभव है। लेकिन वोटों की राजनीति को चमकाने के लिए इसके लिए दुष्प्रयास किये जाते रहे हैं।

मदनलाल खुराना जिन्हें भाजपा ने काम निकल जाने के बाद गंदे–बदबूदार कीचड़ में फेंक दिया था, जब दिल्ली के मुख्यमंत्री थे, तब उन्होंने इस बाबत एक प्रस्ताव विधान सभा में पारित तक करवा लिया था। मध्य प्रदेश विधान सभा में भी भाजपा के लोगों

ने भी ऐसे दुष्प्रयास किये, जो अंततः नाकाम हो गये, क्योंकि ये नाकाम होने ही थे। यह संविधान द्वारा नागरिकों को प्रदत्त उनके मौलिक अधिकारों के सर्वधा विपरीत है। संविधान का अनुच्छेद 25 सभी नागरिकों को अंतः करण और धर्मानुसार अमल करने की आज़ादी देता है। ऐसी ही बात संविधान की प्रस्तावना में कही गयी है।

संविधान में धाराओं 25(1) और 26 के अंतर्गत जो बातें कही गयी हैं उनका सार यह है कि हर धार्मिक समुदाय को इसका अधिकार प्राप्त होगा कि अपने धर्म पर चले तथा अपने तौर पर अपने धार्मिक क्रिया कलाप अंजाम दे। अतः यह सिर्फ मुसलमानों (या अन्य अल्पसंख्यक समुदायों) का मामला ही नहीं, बल्कि संवैधानिक प्रावधान का भी तक़ाज़ा है कि उसके अंतर्गत देश में समान सिविल कोड लागू न हो। यही आदर्श बात भी है। मुसलमानों ने भी समान सिविल कोड को लागू नहीं किया। जब वे लगभग नौ सौ वर्ष तक देश के शासक रहे, कभी भी उन्होंने हिन्दू या अन्य धर्मानुयायी जनता पर अपना क़ानून नहीं थोपा। अंग्रेज़ों ने लार्ड मैकाले की अध्यक्षता में समिति बनाकर भारतीय दंड संहिता, भारतीय दंड प्रक्रिया, भारतीय व्यवहार प्रक्रिया संहिता, भारतीय साक्ष्य अधिनियम आदि बहुत से क़ानून लागू कर दिये, लेकिन समान सिविल कोड की ओर नहीं बढ़े, क्योंकि वे जालिम होने के बावजूद यह जानते थे कि यह किसी भी कीमत पर लागू नहीं हो सकता।

उन्होंने मुसलमानों के लिए पारिवारिक क़ानून 1937 और अलग से मुस्लिम मैरिज डिज़ुलेशन एक्ट 1939 बनाया। देश के किसी भी ख्यातलब्ध विचारक एवं विद्वान ने समान सिविल कोड का समर्थन नहीं किया है। संविधान निर्माता डॉ0 अंबेडकर ने संविधान निर्मात्री सभा में नीति निर्देशक तत्व की धारा 44 में इस बाबत रखे गये प्रावधान पर दक्षिण के कुछ मुस्लिम सदस्यों की आपत्ति का जवाब देते हुए कहा था कि जब तक सब देशवासी इसके लिए राज़ी नहीं होंगे, इसे कदापि लागू नहीं किया जाएगा। देश के प्रथम प्रधानमंत्री पं0 जवाहरलाल नेहरू ने कई बार इसी आशय का मत प्रकट किया था। तत्कालीन सरसंघ चालक गुरू गोलवलकर ने भी इसकी आवश्यकता को सिरे से ख़ारिज किया है। 20 अगस्त 1972 को दिल्ली स्थित दीनदयाल शोध संस्थान के उद्घाटन के अवसर पर उन्होंने साफ़ कहा था कि देश में समान सिविल कोड अवांछित है। उन्होंने कहा था कि जो लोग समान सिविल कोड की बात करते हैं, वे भारत की जरूरत समझते ही नहीं। गुरु जी ने इसी आशय के उद्गार एवं इंटरव्यू में व्यक्त किये थे जो 26 अगस्त 1972 को 'मदरलैंड' में छपा था। आश्चर्य की बात है कि संघ परिवारी अपने गुरू जी की बात का बार–बार अनादर करते हैं। भाजपा के हाल के चुनाव घोषणापत्र में इसकी बात

है। भाजपा नेताओं द्वारा इसकी ज़रूरत बार–बार बताकर गुरु जी की आत्मा को ठेस पहुंचाई जाती है। सुप्रीम कोर्ट का ताज़ा फ़ैसला भी आवंछित है। एक ओर देश में मौजूद मुस्लिम पर्सनल लॉ में बहुत सी ख़ामियाँ हैं, जिन्हें दूर करने की ज़रूरत है, दूसरी ओर इन ख़ामियों को और नहीं बढ़ाया जाना चाहिए।

(क्रान्ति पत्रिका, जून 2014 से ग्रहीत)

❖❖❖

हज़राते हस्नैन रज़ि0.....

इस्लाम मिटाने को उठे थे। बेशक इमाम हुसैन का मौक़फ़ अपनी जगह सही था लेकिन जब हालात ज़ियादा बिगड़े तो आपने यज़ीद से मिलने की ख़्वाहिश की थी बहुत मुम्किन था कि इस तरह मसअ़ला हल हो जाता मगर होनी हो के रही क़ातिलाने हुसैन की क़िस्मत में जहन्नम लिखी थी और हज़रत हुसैन को अपने साथियों के साथ शहादत का दर्जा मिलना था अल्लाह के लिखे को कौन बदल सकता था? ❑❑

हिन्दुस्तानी मुसलमान.....

इसकी विभिन्न प्रणालियां प्रचलित हैं। जन्म का वर्णन करते समय बहुत जगह सलाम पढ़ा जाता है और उस अवसर पर सम्मान हेतु खड़े हो जाने का प्रचलन है, जिसको क़याम (खड़े होना) कहते हैं[1]। इस अवसर पर रौशनी करने, बहुत जियादा रौशनी एवं सजावट और विशेष रूप से पिंडाल सजाने का रिवाज हो गया है। मिठाई बांटने का भी आम रिवाज है। धर्म सुधारक संस्थाएं और अधिकांश यर्थाथवादी विचारधारा रखने वाले विद्वान तथा ज्ञानी पुरुष, इन समारोहों के वाह्य रूप के, जो मीलाद की मजलिसों का आवश्यक अंग बन गये हैं, इसके विरुद्ध हैं। वह इन समारोहों को सरल तथा उद्देश्यपूर्ण बनाने का आवाहन देते हैं और इनकी रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पवित्र जीवन चरित्र से सम्बन्धित सच्ची प्रमाणीक घटनाओं तथा प्रभावात्मक एवं मनोरम कथाओं और आपके सन्देशों का प्रचार एवं प्रसार करने तक सीमित देखना चाहते हैं, और उस बड़ी धन राशि को जो साज सज्जा तथा रौशनी आदि की सजावट में पानी की तरह बाहाई जाती हैं और जिसका अनुमान केवल हिन्दुस्तान में कई करोड़ रूपया वर्षिक तक लगाया जाता है, उन अवसरों पर व्यय करने का आवाहन करते हैं जो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शिक्षानुसार, और मुसलमानों तथा मानव जाति के लिए अधिक लाभप्रद हों। कुछ बड़े शहरों में इस दिन बड़े–बड़े जुलूसों के निकालने का भी रिवाज हो चला है। अब मीलाद के जलसों में नातिया मुशायरे एक आवश्यक अंग बन गए हैं, जिनका क्रम रात भर चला करता है।

---

1. मुसलमानों की कुछ संस्थाएं जो सुन्नत को अधिक महत्व देती हैं और जब तक किसी क्रिया का धार्मिक प्रमाण न हो, उसको व्यवहार में नहीं लातीं, इस सम्मान हेतु क़याम को स्वीकार नहीं करतीं। उनका कथन है कि रसूलुल्लह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने जीवन में अपने लिए आदर हेतु खड़े होने को पसन्द नहीं करते थे अतः परोक्षतः में यह क्रिया नितान्त अनावश्यक है।

❑❑

—उर्दू लेख का सारांश हिन्दी में

बिदअत (दीन में नई बात)

—मौलाना खालिद सैफुल्लाह रहमानी

इस्लाम का अक़ीदा है कि नुबूवत का दरवाज़ा खुदा के आखरी नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर बन्द हो गया और यह दीन और शरीअत मुकम्मल हो गई, अब उसमें ज़रा भी कमी बेशी की गुंजाइश नहीं और उसमें अपनी तरफ से कोई इज़ाफ़ा या ईज़ाद, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खत्मे नुबूवत पर हम्ला और इस दीन के ना तमाम और ना मुकम्मल होने का एलान है। यह इज़ाफ़ा अगर "इबादत" के रंग में हो तो भी काबिले रद है और तजद्दुद (नवीनी करण) के पैरहन (रूप) में हो तो भी ना क़ाबिले कबूल है।

बिदअत का लुग़वी माना (शाब्दिक अर्थ)- ईजाद (आविष्कार), जब आदमी कोई नई चीज निकाले तो उसको बिदअत कहा जाता है।

बिदअत का इस्तिलाही माना (पारिभाषिक अर्थ)- शरीअत की इस्तिलाह में बिदअत दीन में ऐसी नई बात निकालने को कहते हैं जो न तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में रही हो और न बाद में सहाबा के जमाने में रही हो, न नबी सल्लल्लाहु सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के किसी कौल (कथन) या इस तरह के किसी काम पर आपकी खामोशी से उसके जवाज का इशारा मिल रहा हो, न इन दोनों जमानों में इसकी कोई मिसाल मौजूद हो। बदरुद्दीन अ़ेनी फरमाते हैं बिदअत दर अस्ल दीन में किसी ऐसी चीज़ को वजूद में लाना है जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में नही थी। हाफिज़ इब्ने रजब हंबली लिखते हैं: बिदअत ऐसी दीनी नई बात को कहते हैं जिसकी शरीअत में कोई अस्ल मौजूद न हो।

सय्यिद शरीफ जुरजानी लिखते हैं: बिदअत दीन में वह नई बात है जिस पर न सहाबा का अमल था न ताबिईन का, न उसकी कोई शरई दलील हो।

बिदअत की इन तारीफात (व्याख्याओं) से यह बात मालूम हुई कि दुन्यावी ईजादात जैसे विद्युत, इंजन, रेल, मोटर, हवाइ जहाज, टेलीफोन, मोबाईल, कम्प्युटर, इन्टरनेट वगैरह बिदअत नहीं है इसलिए कि इनका तअल्लुक दीन से नही है। इसीतरह दीनी काम की वह शक़्लें जो सहाबा के ज़माने में नहीं थीं जैसे मदरसा, किताबों का छपना, निसाब बना कर पढ़ाना वगैरह मगर उनकी अस्ल सहाबा के ज़माने में मौजूद थीं वह भी बिदअत नहीं हैं मदारिस की अस्ल नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में सुफ़्फा की शक़्ल में मौजूद थीं, आजकल के वोट की अस्ल उस ज़माने में बैअ़त की शक़्ल में मौजूद थी, नमाज़ में लाउड़ स्पीकर के इस्तेमाल की अस्ल उस वक्त तक्बीर कहने की शक़्ल में मौजूद थीं, जिहाद के लिए नये हथियारों की अस्ल कुर्आन मजीद की आयत "दुशमनों के लिए तैयारी करो जो तुम से हो सके" है।

कुछ पहले के बड़े उलमा ने जो तरावीह, इल्मे नह्व, इल्मे सर्फ, दीनी किताबों का छपना वगैरह को बिदअते हसनः कहा है वह लुगत के लिहाज से कहा है वरना शरीअत के ऐतबार से जिसको नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने गुमराही (पथ भ्रष्टता) कहा है, कोई बिदअत हसना नही हो सकती, हदीस में है "कुल्लु बिदअतिन ज़लालतुन" नीज नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया "जिस ने दीन में ऐसी बात निकाली जो मैंने नहीं बताई वह मरदूद है" (हदीस का मफहूम) सहा –बए–किराम के ऐसे बीसों वाकिआत हदीस की किताबों में मौजूद हैं जिनमें उन्होंने कोई बिदअत का काम देखा तो सख़्त नकीर की।

उसके बाद मौलाना ने बिदअत के रद में कई हदीसें नक़्ल फरमाई हैं जिनका खुलासा ऊपर आ चुका। फिर पुराने बड़े उलमा और शुयूख के अक़्वाल (कथन) बिदअत के रद में नक़्ल किये हैं, फिर बिदअत करने वालों की बुराई में फुकहा के अक़्वाल नक़्ल किये हैं।

इस सारे बयान से मालूम हुआ कि दीन में बिदअते हसना बिलकुल नहीं है जहाँ उलमा ने किसी दीनी काम को बिदअते हसना कहा है वह लुगत के एतबार से है उसकी अस्ल शरीअत में मौजूद है।

दीन में ऐसी नई बात निकालना जिस की अस्ल शरीअत में मौजूद न हो न सहाबा के अमल में पाई जाती हो वह गुमराही की बिदअत है उससे बचना हर मुसलमान के लिए जरूरी है।

❖❖❖

मानवता का स्तर.....

उसका समझौता विकृतियों, पापों तथा दुर्व्यवहारों से असम्भव है। पहले भाँति–भाँति का जीवन व्यतीत करने वाले इन सभाओं से कतराते तथा आना कानी करते थे कि कहीं धर्म उनकी गतिविधियों की आलोचना न करे। कुरआन मजीद में हज़रत शुऐब (अलैहिस्सलाम) और उनकी जाति के बीच हुए वार्तालाप का वर्णन किया गया है। हज़रत शुऐब (अलैहिस्सलाम) ने अपनी जाति सेकहा ऐ लोगों नाप तौल में कमी न करो, तुम डन्डी मारते हो और कम तौलते हो, ग्राहक से अधिक से अधिक लेने की ताक में लगे रहते हो और उसको कम से कम देने का प्रयत्न करते हो, यह महा पाप है। कौम ने उत्तर दिया कि क्या तुम्हारी नमाज़ तुमको इस बात की शिक्षा देती है कि तुम हमारे इस आचार व्यवहार पर आक्षेप करो और हमको अपने व्यापार में स्वतन्त्रता पूर्वक कार्यवाही करने से रोको? जाति ने सही अनुमान लगाया। यह समस्त प्रतिबन्ध नमाज़ ही लगाती है और जीवन में सत्य असत्य, उचित–अनुचित, शुद्ध अशुद्ध का भेद बताती है। एक सत्य एवं जीवित धर्म जीवन में मिथ्या, अशुद्ध, असत्य एवं पाप के प्रति मौन धारण नहीं कर सकता।

भाईयो! हमारी यह सभा नितान्त नवीन रूप की है। यह कोई एलेक्शन की सभाओं में से नहीं है, न धार्मिक समारोहों में से कोई समारोह है। हम इस सभा में यह बताने का प्रयास करेंगे कि जीवन का सही मार्ग क्या है? और मनुष्य पतन की ओर क्यों अग्रसरित है?

जारी.....

बच्चों की सामान्य बीमारियाँ

—डॉ0 सूर्यकान्त मिश्र

चिरकारी व्याधि, मस्तिष्क आघात और केन्द्रीय तंत्रिकाओं में दोष आ जाने से बालक अस्थायी रूप से अपंग हो जाता है। जिससे विशेष चिकित्सा शैक्षिक एवं व्यावसायिक पुनर्वास की तात्कालिक आवश्यकता पड़ती है। अस्थायी रोग ग्रसित बालकों की आबादी 1 से 15 प्रतिशत तक प्रभावित है, इसमें पीठ की रीढ़ हड्डी भंग सिरिबल पालिसी 2 प्रतिशत, सन्धिवात हृदय ब्रेन डैमेज, स्पास्टिक, धीमी गति से पढ़ने वाले बच्चे आटोरिज़्म, अति क्रियाशील संकोची ड्राप आउट समाज से अपेक्षित आबादी का दसवां हिस्सा प्रभावित है।

मधुमेह से पीड़ित बच्चे 15 वर्ष की आयु में मिलते हैं जो गुर्दे की छोटी नली में दोष से पीड़ित होते हैं। ऐसे रोगी को न्यूफोरोसिस कहते हैं। अनुपात लड़कियों में एक तथा लड़कों में दो मिलता है। मांसपेशियों में निष्क्रियता को मस्कुलर डिसट्रोफी कहते हैं।

सामान्यता आबादी का 2000 में एक प्रतिशत प्रभावित है। हाथ, में संतुलन का अभाव गर्दन का हिलना—डुलना और कम्पन मिलता है। एसे बच्चों में उठने बैठने, पकड़ने हिलने डुलने की क्रियाओं में समानता का अभाव मिलता है। मिर्गी, दौड़े और सीजर ग्रस्त बालक, आबादी के 1.5 प्रतिशत इस रोग से प्रभावित हैं। जीवन के प्रारंभिक वर्षों में दौड़े, मिर्गी व सीजर रोग ज़्यादा मिलता है।

केन्द्रीय तंत्रिका पद्धति दोष : कान्डेसियस 'संक्रामक तरह की बीमारी' इसमें केन्द्रीय तंत्रिका से अधिकांश बच्चे प्रभावित होते हैं, जिसे दिमाग़ी बुख़ार कहते हैं। जिससे मस्तिष्क की क्रियाशीलता प्रभावित हो जाती है, पढ़ने—लिखने, समझने और पहचानने तथा सुनने—बोलने में इसका प्रभाव पड़ता है। वैज्ञानिकों का कहना है कि 8 से 2 प्रतिशत तंत्रिका दोषी और गंभीर तंत्रिकामयी असमानता अपरिपक्व समूह में मिलता है।

श्वांस सम्बन्धी रोग : बच्चों में 10 से 15 प्रतिशत दमा की शिकायत मिलती है। श्वांस फूलना, खांसी आना, टांसिल, नाक बहना, कान में दर्द होना, एक स्थाई रोग बचपन मे मिलने के लक्षण मिलते हैं, जिसका पढ़ाई पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

आँतों में घाव हो जाने से पाचन क्रिया प्रभावित हो जाती है। भूख नहीं लगती, पेट में दर्द और ऐंठन, जी मिचलाना यह लक्षण स्कूली बच्चों में मिलते हैं, जिससे पढ़ाई में बाधा आती है। दो वर्ष से 12 वर्ष के बच्चों में यह लक्षण ज़्यादा दिखाई पड़ते हैं। इन्हें विशेष चिकित्सा के अंतर्गत शरीर की देखभाल और संतुलित आहार देना ज़रूरी है।

मोटापा : ज़्यादा घी, दूध मक्खन, मलाई, चावल, आलू खाने से मोटापा हो जाता है। ऐसे बच्चे जल्दी थक जाते हैं और खेल–कूद से भी जी चुराते हैं।

5 से 10 प्रतिशत बालक मोटापा से प्रभावित हैं। इन्हें दैनिक रूप से खेल व कसरत करायी जाये और वसा सम्बन्धी भोजन न दिये जायें।

त्वचा विकार : मस्तिष्क में संचित और दमित संवेगात्मक तनाव त्वचा के कार्यों पर भी प्रत्यक्ष रूप से प्रभाव डालता है। प्रबल क्रोध से चेहरा लाल होना और तीव्र भय से रोंगटे खड़े हो जाना, चेहरा पीला पड़ना और शरीर में ठंड लगना यह लक्षण मिलते हैं। 35 से 60 प्रतिशत बच्चों में यह लक्षण ज़िद्दी तोड़–फोड़, सिर पटकना आज्ञा न मानना, दाँत पीसना, और अस्वाभाविक व्यवहार करना प्रदर्शित होता है, इसमें एकाग्रता भंग होती है, पढ़ने में मन नहीं लगता है। प्रोफ़ेसर शुर का कहना है कि त्वचा पर संचित संवेगात्मक तनाव का अप्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। प्रदूषण से एलर्जी भी होती है।

नेत्र दोष : 20 से 30 प्रतिशत बच्चों में नज़दीक और दूर की नज़र में परेशानी, रंग की पहचान, रतौंधी, आँखों से पानी गिरना, भेंगापन, तिरछा देखना, माड़ा और फूली पड़ना, आँख लाल हो जाना, नेत्र संचालन में परेशानी, सिर में दर्द यह आम शिकायत स्कूली बच्चों में मिलती है पर्याप्त रोशनी हो, कमरा खुला हो साथ ही नेत्र विशेषज्ञ से जांच करायें, विटामिन–ए का सेवन करें और हरी सब्ज़ी का प्रयोग करें।

कान की परेशानी : कान दर्द, कान बहना, कान में आवाज़ आना, कम सुनाई देना बाह्य हिस्सा विकृत होना, कान के पर्दे में छेद होना, बच्चों में 15 से 20 प्रतिशत तक यह लक्षण मिलते हैं। विशेषज्ञ को तुरन्त दिखाकर चिकित्सा करायें। नाक का बहना, ख़ून आना, नाक में मांस बढ़ जाना, झिल्ली पड़ना, सांस लेने में कठिनाई होना, यह भी कठिनाइयां बच्चों में देखने को मिलती हैं। इसमें आर्डियोमेट्री करायें, कान, नाक, गला विशेषज्ञ को दिखायें।

मानसिक मंदता : स्कूली बच्चों में थकावट और आयोडीन की कमी चयापचय, अनियमितातायें, असन्तुलित आहार और हारमोन, अनुवांशिक कारणों और रक्त विकार, मस्तिष्क चोट एवं अत्यधिक दवाइयों के प्रयोग से मानसिक विकलांगता 5 से 10 प्रतिशत स्कूली बच्चों में मिलती है। आई–क्यू 60 से लेकर 80 के आस–पास देखे जाते हैं। मंगोल छोटा और बड़ा सिर का होना मुख्य लक्षण मिलते हैं। ऐसे बच्चे मन्दबुद्धि कहे जाते हैं, इन्हें विशेष विद्यालय में पढ़ने की व्यवस्था करनी चाहिए।

उपर्युक्त स्थायी रोग से ग्रसित बालकों के लिए यह आवश्यक है कि उनके शारीरिक और मानसिक मूल्यांकर करने के बाद ही कक्षा में बैठने का निर्णय लेना चाहिए विशेष अध्यापक ऐसे बालकों को पढ़ायें–लिखाएं। विभिन्न प्रकार के

उपकरणों, रिमिडियल और करेक्शनल थेरेपी निर्देशन और परामर्श केन्द्र, स्पीच और फिज़ियोथेरेपी, सन्तुलित पौष्टिक आहार की व्यवस्था स्कूल व शासन द्वारा किया जाये।

सुधार गृह, विशेष विद्यालय के प्रबन्धन की आवश्यकता है। अभिभावक स्कूल और सरकार उचित सहयोग, सहानुभूति पूर्वक व्यवहार, सुविधा और अवसर प्रदान कर सकें। जिससे वह बालक पढ़–लिखकर अपना जीवन स्वतंत्र रूप से निर्वाह कर सकें। पाठ्यक्रम का ज़्यादा बोझ और लगातार लम्बी अवधि तक कक्षा में बैठने में कठिनाई होती है। इसलिए इन बातों पर ध्यान रखना यथार्थ व व्यवहार रूप से विद्यालय कक्षा का प्रबन्ध करें। जिससे स्थायी रोगग्रस्त बालक अपनी क्षमता का प्रदर्शन कर सकें।

मानसिक रोग

एक सर्वेक्षण में बताया गया है कि 60 फ़ीसदी लोग अनेक प्रकार की मानसिक बीमारियों से ग्रस्त हैं। और इसके चलते उन्हें शारीरिक बीमारियां भी घेर लेती हैं।

सर्वे में बताया गया है कि बीमारियों के रूप अलग–अलग हैं लेकिन उनके कारण एक समान हैं। सर्वेक्षण के मुताबिक़ अनेक वृद्ध अपने पारिवारिक, सामाजिक जीवन से एक दम अलग हो गए हैं।

वे वृद्ध किसी से बात नहीं करना चाहते हैं और वे यह भी नहीं करना चाहते हैं कि कोई उनसे बातचीत करे। उनके स्वभाव में चिड़चिड़ापन आ गया है। वे कभी गुस्सा नहीं करते थे वे अब गुस्सिले हो गये हैं।

इन वृद्धों ने घर की प्रत्येक छोटी–बड़ी बात में हस्तक्षेप करना शुरु कर दिया है। पहले जिन बातों की चर्चा नहीं करते थे अब उनके बारे में यह वृद्ध कुटेड–कुटेड कर पूछते हैं। इस प्रकार के व्यवहार से उनके परिजन परेशान रहते हैं। यह वृद्ध अब यह आरोप लगाते हैं कि परिवार वाले अब उनकी उपेक्षा कर रहे हैं क्योंकि अब वे कुछ कमाते नहीं हैं।

वृद्धों के इस प्रकार बदलते व्यवहार ने विशेषज्ञों को सोचने पर मजबूर कर दिया है। एक मनोचिकित्सक का मानना है कि व्यक्ति की विशेषकर पुरुष वर्ग की रिटायरमेंट के बाद अब 30–40 सालों से चली आ रही एक नियमित काम पर जाने की गतिविधि ख़त्म हो जाती है तो उस समय उसके जीवन में अचानक ख़ालीपन आ जाता है। जो वृद्ध पहले से ही अपने रिटायरमेंट के बाद की ज़िन्दगी के बारे में मानसिक रूप से तैयार रहता है उसे ज़्यादा समस्या नहीं आती। एसे परिवारों में भी यह समस्या कम है जहां संयुक्त परिवार के तथा वृद्धों को अपनी कंपनी मिल ही जाती है। लेकिन समस्या एवं मानसिक तनाव और बीमारियों से वे वृद्ध घिरे हैं।

(कान्ति पत्रिका, जुलाई 2014 से ग्रहीत)

❖❖❖

पाठक अपने मित्रों को सच्चा राही का खरीदार बना कर सहयोग करें।

विभिन्न कविताऐं

मुशकिल से भी मुशकिल है

विद्युत, इंजन, मोबाइल बिन, जीवन अब तो मुशकिल है
अविष्कृत सामग्री बिन तो, यां का जीवन मुशकिल है
इन चीज़ों बिन मुशकिल जीवन, किसी तरह कट जाएगा
पर धर्म बिना तो अगला जीवन, मुशकिल से भी मुशकिल है

मोमिन और महब्बत

मोमिन तो अपने रब से रखता है महब्बत
मोमिन नबीये पाक से रखता है महब्बत
और उनके सब अ़स्हाब से रखता है महब्बत
प्यारे नबी की आल से रखता है महब्बत
हाँ आल में ह़स्नैन का इक खास है दर्जा
मोमिन ह़सन हुसैन से रखता है महब्बत
माऐं हैं मोमिनों की अज़वाज नबी की
मोमिन सभी उन माओं से रखता है महब्बत
पर जिन को महब्बत का दावा है जान लें
ताअ़त बिना साबित नहीं होती है महब्बत
मोमिन भले इन्सान से रखता है महब्बत
मोमिन भले हर काम से रखता है महब्बत
या रब नबीये पाक पर लाखों सलाम हों
और उनके सब अस्हाब पर उतरे तेरी रहमत

दहशत गरदी

दहशत गरदी बहुत बुरी है इसका हरगिज़ नहीं जवाज़
दीनी आ़लिम यही हैं कहते, जो हैं समझते दीन का राज़
क़त्ले नाह़क़ कहेंगे इसको, कहें ना इसको कभी जिहाद
धोखे से जो हुए मुलव्विस फ़ौरन आएं इससे बाज़

मुसलमान औरतों के लिए शरीअत के कुछ अहकाम (आदेश)

मुसलमान औरत को चाहिए कि बाहर निकले तो उसका पूरा बदन ढीले ढाले कपड़ों से ढका रहे। मुसलमान औरत को चाहिए कि वह अपने शौहर या महरम के अलावा किसी अजनबी (नामहरम) मर्द से तन्हाई न इख़्तियार करे अर्थात एकान्त में न हो न एक कमरे में अजनबी के साथ बैठें मुसलमान औरत को चाहिए कि वह अपने शौहर या किसी महरम के बिना शरई दूरी का सफ़र न करे यहां तक कि हज को भी महरम या शौहर के साथ के बिना न निकले।

नोटः– महरम से तात्पर्य ऐसा मर्द है जिससे इस्लामी शरीअत में कभी भी निकाह न हो सके। शरई दूरी का सफ़र से तात्पर्य वह सफ़र है जो कम से कम 78 किलो मीटर का हो।

आतंकवाद

सुनलें भाई ध्यान से इसको
महापाप है आतंकवाद
आतंकवादी ना पाएगा
ईश्वर कृपा का प्रसाद
मानव हत्या है यह अकारण
सत्य विजय की नहीं है बात
महा पाप है आतंकवाद
आतंकवाद, निशाचर वाद

अदब

अदब ही से इन्सान, इन्सान है
अदब जो न सीखे वह हैवान है
जहाँ में हो प्यारा न क्यों कर अदब
कि है आदमीयत का ज़ेवर अदब
न हो जिसको अच्छे बुरे की तमीज़
न वह घर में प्यारा न बाहर अज़ीज़
बिठाता नहीं कोई बे अदब को क़रीब
यह सच बात है बे अदब बे नसीब

–मोलवी इस्माईल मेरठी

मानव की पहचान

मानव की है यह पहचान
करें परस्पर सब सम्मान
जिस मानव में गुण यह न हों
भाई उसको दानव जान
बने न मानव हिंसक पशु
मानवता का सीखे ज्ञान

वक़्त की पुकार

मुसाफिर नहीं हूँ ठहर जाने वाला।
इधर आने वाला उधर जाने वाला
मैं हूँ वक़्त, आ कर निकल जाने वाला
ज़मीं पर मैं साया हूँ ढल जाने वाला
वह हूँ आने वाला जो आ करके जाए
वह हूँ जाने वाला जो जाकर न आए
लड़कपन को लह व लइब में गवाँ कर
जवानी को ग़फ़लत की नींदें सुला कर
बुढ़ापे का फिर बोझ सर पर उठा कर
चला दो क़दम और गिरा लड़खड़ा कर
यह उस का नतीजा है जो मुझ को खोए
जो खोए मुझे ज़िन्दगी भर वह रोए
ख़बरदार ओ बेख़बर सोने वाले
मताए गरां माया के खोने वाले
जो हैं सोने वाले वह हैं खोने वाले
हैं आख़िर पशेमाँ बहुत होने वाले
जो रहरौ हैं रहज़न से होशियार हो जा
चला क़ाफ़िला जल्द होशियार हो जा

उर्दू सीखिये

—इदारा

गतिशील हिन्दी अक्षरों के उर्दू रूप

हिन्दी	ठ	ठा	ठि	ठी	ठु	ठू	ठे	ठै	ठो	ठौ
उर्दू	ٹھَ	ٹھَا	ٹھِ	ٹھِی	ٹھُ	ٹھُو	ٹھِے	ٹھَے	ٹھُو	ٹھَو
हिन्दी	ड	डा	डि	डी	डु	डू	डे	डै	डो	डौ
उर्दू	ڈَ	ڈَا	ڈِ	ڈِی	ڈُ	ڈُو	ڈِے	ڈَے	ڈُو	ڈَو
हिन्दी	ढ	ढा	ढि	ढी	ढु	ढू	ढे	ढै	ढो	ढौ
उर्दू	ڈھَ	ڈھَا	ڈھِ	ڈھِی	ڈھُ	ڈھُو	ڈھِے	ڈھَے	ڈھُو	ڈھَو
हिन्दी	त	ता	ति	ती	तु	तू	ते	तै	तो	तौ
उर्दू	تَ	تَا	تِ	تِی	تُ	تُو	تِے	تَے	تُو	تَو
हिन्दी	थ	था	थि	थी	थु	थू	थे	थै	थो	थौ
उर्दू	تھَ	تھَا	تھِ	تھِی	تھُ	تھُو	تھِے	تھَے	تھُو	تھَو
हिन्दी	द	दा	दि	दी	दु	दू	दे	दै	दो	दौ
उर्दू	دَ	دَا	دِ	دِی	دُ	دُو	دِے	دَے	دُو	دَو
हिन्दी	ध	धा	धि	धी	धु	धू	धे	धै	धो	धौ
उर्दू	دھَ	دھَا	دھِ	دھِی	دھُ	دھُو	دھِے	دھَے	دھُو	دھَو
हिन्दी	न	ना	नि	नी	नु	नू	ने	नै	नो	नौ
उर्दू	نَ	نَا	نِ	نِی	نُ	نُو	نِے	نَے	نُو	نَو
हिन्दी	प	पा	पि	पी	पु	पू	पे	पै	पो	पौ
उर्दू	پَ	پَا	پِ	پِی	پُ	پُو	پِے	پَے	پُو	پَو
हिन्दी	फ	फा	फि	फी	फु	फू	फे	फै	फो	फौ
उर्दू	پھَ	پھَا	پھِ	پھِی	پھُ	پھُو	پھِے	پھَے	پھُو	پھَو

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

—डॉ0 मुईद अशरफ़ नदवी

इस्लामी राज्य का किया ऐलान— सुन्नी चरमपंथियों के संगठन इस्लामिक स्टेट इन इराक एंड अल शाम (आईएसआईएस) ने इराक और सीरिया में अपने अधिकार वाले हिस्से को 'खिलाफत' अर्थात इस्लामी राज्य घोषित कर दिया है। उन्होंने अपने प्रमुख अबू बकर अल—बगदादी को इस नए इस्लामी राज्य का 'खलीफा' घोषित किया है।

चरमपंथियों ने अपनी वेबसाइट पर यह सन्देश जारी किया है। एक वीडियो के जरिये दिए गए इस संदेश को आईएसआईएस के प्रवक्ता अबू मोहम्मद अल—अदनानी की ओर से जारी किया गया है। इसमें कहा गया है, उत्तरी सीरिया के अलेप्पो से लेकर पूर्वी इराक में दियाला तक का भूभाग इस्लामी राज्य होगा। आगे से संगठन को आईएसआईएस, नहीं बल्कि इस्लामी राज्य के रूप में जाना जाए और इसके नेता अबू बकर अल बगदादी को दुनिया भर के मसलमानों का 'खलीफा' माना जाए।

नब्बे साल के बाद खलीफा युग की दोबारा वापसी—

सीरिया और इराक के मुल्कों पर कब्जा करने वाले चरमपंथी गुट इस्लामिक स्टेट इन इराक एंड सीरिया (आईएसआईएस) ने अपने नेता अबू बकर—अल—बगदादी को सुन्नी मुस्लिमों का खलीफा घोषित किया है। इसके अलावा इस गुट ने ऐलान किया है कि अपने कब्जे वाले क्षेत्र को वह अब इस्लामी राज्य कहेगा। खलीफा व्यवस्था वर्ष 1924 में खत्म हो गई थी, जिसे दोबारा स्थापित किया गया है।

खलीफा व्यवस्था— पैगम्बर मुहम्मद के उत्तराधिकारी को खलीफा कहा जाता है। खलीफा को ही समुदाय का प्रमुख माना जाता है। गुजरते समय के साथ खलीफा धार्मिक राजनीतिक पद बन गया, जिसका इस्लामिक साम्राज्य चलता था।

खलीफा को लेकर सुन्नी और शिया में थे मतभेद— पैग़म्बर मोहम्मद के बाद खलीफा बनाने को लेकर सुन्नी और शिया में फूट पड़ गई थी। सुन्नी का मानना था कि पैग़म्बर मोहम्मद का कोई भी उपयुक्त अनुयायी खलीफा बन सकता है। इसीलिए पैग़म्बर मोहम्मद के सहयोगी अबू बक्र को पहला खलीफा घोषित किया गया। अबू बक्र के बाद उमर खलीफा बने। दूसरी ओर, शुरुआती शिया मानते थे कि पैग़म्बर मोहम्मद का कोई करीबी रिश्तेदार ही खलीफा होना चाहिए। उनकी नजर में खलीफा के लिए सबसे उपयुक्त व्यक्ति पैग़म्बर के दामाद हज़रत अली रज़ि0 थे।

उमय्या खलीफाओं ने 661 से 750 तक किया राज— हज़रत अली की हत्या के बाद उनके प्रतिद्वंदी मुआविया ने सीरिया की राजधानी दमिश्क में उमय्या खलीफा की स्थापना की। उमय्या खलीफाओं ने 661 से 750 तक राज किया। उसके बाद अब्बासी खुलफा ने उमय्या खलीफाओं को सत्ता से हटाया। ❑❑